भुवनेश स्मारक ग्रंथमाला। १ सुमन

वीर हम्मीर नाटक।

लाल रुद्रनाथ सिंह प्रणीत।

॥ श्रीः ॥

वीर हम्मीर

वीररस प्रधान—

ऐतिहासिक नाटक।

जिसको

श्रीमान् महाराजकुमार लाल त्रिलोकीनाथसिंह सुत,
लाल रुद्रनाथसिंह ने निर्म्मित कर नाटक प्रेमियों
के उपकारार्थ प्रकाशित किया।

मैनेजर पं० आत्माराम शर्म्मा द्वारा—
जार्ज प्रिंटिंग वर्क्स, कालभैरो, काशी में मुद्रित हुआ।

प्रथम संस्करण १०००]   [मूल्य ॥=)

समर्पण ।

श्रद्धास्पद !

स्वर्गीय, श्रीमान् पूज्य पिता के युगुल चरणों में सादर समर्पित

(सोरठा)

सुमन अंजली लेहु, पितु वासी सुरपुर सदन ।
सौंपहुं सहित सनेहु, तुव युगपद अरविन्द मैं ॥

काका !

यद्यपि आप अपने इस किंकर को एक दम शैशवावस्थाही में छोड़कर स्वर्ग सिधारे थे किन्तु! यह केवल आप के ही पुण्य प्रताप का प्रभाव है कि जो आज यह आप का सेवक आपके लगाये हुए वीरव की प्रथम कलिका आपके चरणों में चढ़ा रहा है आशा है इसे अपने एक तुच्छ पुत्र की भेंट स्वरुप जानकर स्वीकार कीजियेगा ।

आपका आज्ञाकारी—
पुत्र
रुद्रनाथ ।

निवेदन ।

इस ग्रन्थ को मैंने अभी पहिले पहिल लिखा है अस्तु ! इसमें त्रुटियां अवश्य होगी अतः आशा है कि मेरे सुयोग्य पाठक उन त्रुटियों को सुधारलेंगे और अपने इस नव लेखक की कविता को अपनाकर इसे उत्साहित करेंगे-यदि यह ग्रन्थ आपलोगों के रुचिकर हुवा तो यह दास पुनः "बाल विवाह प्रहसन" तथा "जन्म भूमि" यह पुष्पांजलि आपके सामने ले उपस्थित होगा—

विनीत

आपलोगों का दासानुदास

रुद्रनाथसिंह—
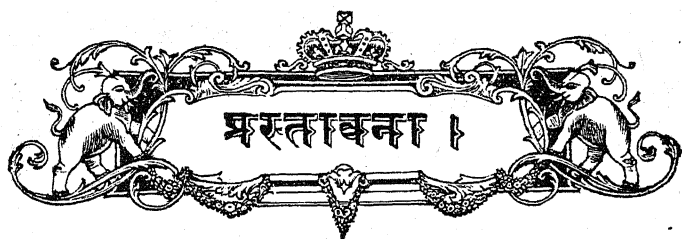
प्रिय पाठक !

मुझे यह स्वप्न में भी ध्यान न था कि मैं कभी इस योग्य हूंगा कि अपने जीवन में अपनी जन्म भूमि भारतमाता का तथा अपने भाइयों की कुछ भी सेवा कर सकूंगा ।

सन् १९१३ का साल मेरे जविन का एक शुभ काल था जिस समय मेरे हृदय में हिन्दी-हितैषिनी सभाके विचार जागृत हुए थे अस्तु ! उस मेरे विचार को मेरे परम मित्र बाबू मिट्ठन-लालजी, स्वर्गीय सखा बाबू विश्वनाथ प्रसादजी, बाबू चन्द्रप्रताप-सिंह पाण्डेय, राम चरित्रजी एवं बाबू दुर्गासिंहजी ने कार्यरूप में परिणित कर सभाका संस्थापन किया था, अतः इन मेरे उपरोक्त मित्रों के साथ मैं समस्त सभाके सदस्यों का कृतज्ञ हूं क्योंकि तभी से मुझे इस हिन्दी माता की सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ ।

तब से आज लों मैंने देवनागरी भाषाके अनेक ग्रन्थ देखे, प्रातः स्मर्णीय भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र जी की ग्रन्थावली कतिपय जीवन चरित्र बहुतेक देशोंके इतिहास पढ़ने का शुभ औसर मिला, साथ ही श्रीयुत पं० यज्ञराजजी भट्टसे कुछ काव्य

कला भी सीखा । वरन यह पुस्तिका उन्हीं गुरुवरके लगाये हुए विटप की मुकुल है और जिस्के लिये मैं उन महानुभाव का अत्यन्त ऋणी एवं कृतज्ञ हूं, इसके अतिरिक्त अपने पूज्य पिता के निर्मित्त काव्यकुसुम का भी ग्रहण किया और तभी से मेरे चित्त में चिंता उत्पन्न हुई कि मैं भी अपने पूर्वज श्रीमान् दादा लक्ष्मीनाथसिंह पूज्य पिताजी एवं पितामह महाराजा सरमान-सिंह तथा और कुटुम्बियों के सदृश इस अपनी नागरी का एक तुच्छ सेवक बनूं और चट यह धारणा हुई कि कुछ लिखूं किन्तु क्या लिखता ? मनोगत भाव उठते और पुनः बिलीन हो जाते थे, बहुत ठीक है ! समय पर ही सब काम होते हैं असमय चाहे कोई कितना भी सिरमारे किन्तु वहीं "तीनकाने चित्त"—

निदान एक बार मुझे ग्वालियर जाने का अवसर मिला और उसी यात्रा में सौभाग्यवश मुझसे मेरे मित्र पं० राम-प्रसादजी मिश्र भूतपूर्व जीवन सम्पादक से भेंट हुई, और वह मुझे अपना संकलित "राजसिंह" नाटक पढकर सुनाने लगे आद्यो-पान्त सुनाया जो अब छप भी चुका है वस्तुतः उस समय मेरी आत्मा ने मुझे और भी विवश किया कि मैं भी अवश्य कुछ लिखूं और अपने मित्र का सहगामी बन पांचो सवारों में अपना नाम लिखाऊं, किन्तु फ़िर वही ! क्या लिखूं ? यह समस्या हृदय सागर में लहराने लगी—

लगभग एक वर्ष के बीता होगा, मैं अपने पूज्य मित्र

पांडेय श्यामनारायणजी (जगदीश पुर) के यहां गया था और वहां पर काव्य विनोद हो रहा था कि उसी क्षण वे उठे और चट अलमारी से "हम्मीर हठ" उठा कर लाये और मुझे आद्योपांत पढ़कर सुनाया, और कहने लगे कि भाई यदि आप इस पर कोई नाटक लिखें तो वीररस का एक अपूर्व प्रबन्ध होगा। बस उसी समय मेरे मनमें यह भाव जमा और मैंने निश्चय कर लिया कि मैं अवश्य इस ग्रन्थ को नाटकरूप में परिवर्तित करूंगा। घर आया, पुस्तक भी साथ लाया और पुनः आद्योपान्त पढ़ा। अहा ! यह ग्रन्थ वास्तव में एकदम वीररस से परिपूरित है मेरी सम्मति में तो यह प्रबन्ध यदि शय्याशायी मरणोन्मुख मनुष्य को भी सुनाया जाय तो हिरण्यगर्भ का काम देवे और नहीं तो एक बेर उसके मुख पर "वीरता" के भाव झलकने लगेंगे। विशेषतया इस महासंग्राम के समय तो ऐसे नाटकों को अवश्य जनता में प्रचार करना उचित है, जब कि हमारी न्यायशीला सरकार एक संकट में पड़ी है और उसे भारती जनता के सहायता की अत्यन्त आवश्यकता है।

सुतराम इन्हीं विचारों ने मुझे विह्वल किया कि मैं इसे अवश्य नाटकरूप में परिवर्तित करूं, क्यों नहीं ! क्योंकि दृश्य काव्य में लाने से देश की शिक्षित और अशिक्षित समाज दोनों पर इसका पूर्ण प्रभाव पड़े और अपने एक आदरणीय पथ-प्रदर्शक की चरितावली देखकर इससे लोग कुछ लाभ उठावें।

यद्यपि मैं अभी तक अयोग्य हूं प्रत्युत ऐसे महान् रणधीर की चरितावली लिखने में जिससे कि भारत की समस्त जनता कुछ सीख सकती हो, अस्तु! केवल उत्साह के ही बल इस कार्यक्षेत्र में ताल ठोककर कूद पड़ा—

एक अंक लिखा और उसे अपने इष्ट मित्रों को दिखाया सब को रुचिकर हुआ परन्तु वह क्षुद्रांश पांच महीने लो श्याम नारायणजी की मंजूषा का सेवक बना रहा, यद्यपि इस बीच में भी वहां गया और वे महाशय भी मेरे पर्ण कुटीर पर पधारे पर इसका स्मरण किसी को न था अन्त में मुझे ही याद आई बस वहां जाकर उसे ले आया और कार्य्यारंभ किया।

इसी बीच में एकाएक मेरे घर काशी निवासी पं० चुन्नी-लालजी मालवीय काशी जीर्णोद्धारिणी सभा की ओर से प्रचारार्थ पधारे और उन्होंने मेरे ऊपर अनंत कृपा करके उन्नीस दिन लों मेरा आतिथ्य स्वीकार किया, बातों बातों में जब यह ज्ञात हुआ कि आप सौम्य होते हुए हिन्दी के अनन्य विद्वान हैं और इनके भ्राता "आदर्श भारतेन्दु नाटक समिति" काशी के सदस्य भी हैं। अस्तु, मैंने इन्हें भी अपना यह क्षुद्रनाटक दिखाया जिसे देख वे अत्यन्त प्रसन्न हुए बरन मुझे बड़ा उत्साह दिया फिर तो मुझे उन महाशय से बड़ी सहायता मिली अतः इस महाउपकार का प्रत्युपकार करने में अवश्य असमर्थ हूं और जिसके लिए मैं उनका आजन्म ऋणी रहूंगा।

यह तो विदित ही है कि यह नाटक "हम्मीर हठ" का छायानुवाद है, किन्तु कहीं २ उससे इसमें भेद है और वह केवल जान बूझकर रक्खा गया है जिसके लिए हमें पूर्ण आशा है कि हमारे विज्ञ पाठक उसको स्वयं समझ लेंगे इसमें कहीं २ मूल ग्रन्थ की कवितायें अवश्य रखी गई हैं जिसका कि एकमात्र हेतु यह है कि मूल ग्रन्थकार पं० चन्द्रशेखरजी के भाव बड़े ओजस्वी थे अस्तु-मैं उसे यथास्थान रखने के लिए विवश हुवा।

इस नाटक में ४ मनुष्यों के अतिरिक्त शेष सब नाम कल्पित हैं आशा है इसे हमारे पाठकवृन्द अवश्य समझ लेंगे मुझे बड़ी चिन्ता इस बात की है कि मैं मूल ग्रंन्थकार पं० चन्द्रशेखरजी तथा प्रकाशक बाबू जगन्नाथ दास "रत्नाकर" को किस प्रकार और किन शब्दों में धन्यवाद दूं कि जिनकी अपूर्व ग्रन्थलकुटिया से मेरे ऐसे अन्ध लेखकों को भी आश्रय मिला। मैं अपने परममित्र पं० चुन्नीलालजी के जेष्ट भ्राता पं० मुन्नीलालजी को भी बिना धन्यवाद दिये न रहूंगा क्योंकि वे सब प्रकार का मार्गश्रम सहकर काशी से केवल इसी मेरे "नाटक" रचना को देखने के लिये पधारे थे। इसके अतिरिक्त गायनाध्यापक पं० बिष्णु बोवा को (कि जिनका बनाया हुवा कोरस और सहेलियों के गाने इस ग्रन्थ में हैं) भी हृदय से आजन्म धन्यवाद देता रहूंगा, क्योंकि इन उपरोक्त महाशयोंने और पं० आत्मारामजी (मैनेजर तथा प्रोप्राइटर जार्ज प्रिंटिंग वर्क्स

काशी) तथा "आदर्श भारतेन्दु नाटक मण्डली" के डाइरेक्टर बाबू बीरेन्द्रनाथदास वो बाबू दुर्गाप्रसाद तथा मण्डली के अन्य अन्य सदस्यों ने भी इसे रंग भूमि में खेलने का बचन देकर मेरा उत्साह बढ़ाया है अस्तु मैं इन सदस्यों का भी अंतर आत्मा से कृतज्ञ हूं—

महाशय प्रोफेसर महेशचरण सिंह ने भी मुझे इस ग्रन्थ के लिखने में बहुत कुछ योग दिया है—अस्तु मैं उनका भी परम धन्यवादी हूं इस रचना में हमारे प्रिय भ्रातृज कविवर लाल अमरेन्द्रनाथसिंह जी (अमरेश) और उनके कनिष्ट भ्राता लाल जयन्द्रनाथसिंह कि (जिनका इस नाटक का नाम करण किया हुवा है) मुझे निसदिन उत्साह एवं योग देते रहे वरन "अमरेश" महाशय की तो इसमें कहीं २ कवितायें भी हैं अस्तु मैं इन दोनों अपने प्रिय भतीजो का भी परम कृतज्ञ एवं रिणी हूं मैं सब से बड़ा कृतज्ञ अपने अनुज चि० लाल केदारनाथसिंह का हूं कि जिन्होंने मेरे सिर से इस गृह भ्रम जालका टोकरा उतार कर अपने सिरधार मुझे इसी काम के लिए एकदम अवकाश दिया इसके अतिरिक्त मैं अपने बालसखा मीर हसबुलहुसेन (अर्बी के एक अच्छे विद्वान हैं) जो मुझे समय २ पर उत्साह एवं उर्दू फारसी के शब्दों में योग देते रहे हैं, मैं उनका भी धन्यवादी अवश्य हूं—

रुद्रनाथसिंह ।

नाटक के पुरुष पात्र ।

हम्मीर	रण थम्भोर के राणा ।
कविजी	हम्मीर के दरबार के कविराजा ।
विदूषक	एक चौबे ।
मंत्री	हम्मीर का मंत्री ।
यशवंत सिंह	हम्मीर की प्रजा ।
सुखबीर सिंह	हम्मीर देवका सिपाही
सुजान सिंह	सुखबीर सिंह का भाई ।
जाजा बड़ गुज्जर	हम्मीर देवका वीर ब्राह्मण
रत्नसिंह	हम्मीर देवका दरबारी राजपूत ।
अलाउद्दीन	दिल्ली सम्राट ।
मीर मंगोल	अलाउद्दीन का सिपहसालार ।
नसीर	ख्वाजा सरा ।
वज़ीर, मनसबदार	अलाउद्दीन का सलाहकार ।
सरदार	फौज का अफसर
हिम्मत खां	सरदार का भाई ।
जुम्मन, नब्बन, सलारू, खुदग़र्ज़ खां, नामर्द खां, मिज्जू	अलाउद्दीन के सिपाह ।

स्त्री पात्र ।

तीन बेगम	सम्राट अलाउद्दीन की बेगम ।
योगिनी	बन देवी ।
बिजुली जान	खुदगर्ज़ की बीबी ।
देवल देवी	हम्मीर देव की कन्या ।
दुधुआ	हम्मीर देव की माता ।
मोहिनी माधवी जयन्ती	देवल देवी की सहेलियां ।

बन्दी, चोबदार, सहेलियाँ, कापालिक, भठियारा भठियारिन, सैनिक, उपरोहित इत्यादि ।

स्थान ।

दिल्ली—रणथम्भोर, चित्तौरगढ़—

———०———

॥ श्रीः ॥

वीर हम्मीर नाटक

प्रथम अंक ।

प्रथम गर्भाङ्क । (स्थान रङ्गशाला)

नान्दी का गाते हुए प्रवेश (राग प्रभाती)

बन्दौं तोहि मातु माथ नाय जोरि पनियां ।

उत्तर हिमगिरि विशाल, तीन ओर सिन्धु भाल ।

रिपु लखि हिय उठतसाल, संमति सुख सनियां ॥१॥

सरजू यमुना कि धार, महनद नर्मद अपार ।

गोदावरि ब्रह्मसोन, गंगा अघ हनियां ॥२॥

हरिश्चन्द्र अरु भीष्म राम, कृष्ण नहुष परसुराम ।

तेरे ही गोद पले, नृगहु कर्ण दनियां ॥३॥

अनुसूय्या पारवती, गान्धारी सत्यवती ।

सीता सावित्री आदि, राधा सी रनियां ॥४॥

गोविन्द रणजीत वीर, शिव प्रताप पृथूमीर[१] ।

लहि तुअ रज वायु नीर, बने परन ठनियां ॥५॥

१—हमीरदेव ।

बालमीक तुलसि सूर, केशव जयदेव चूरं[1]।
कविता जिन की सपूर, तिन की तू जनियां ॥६॥
रत्नावलि तैं विशेष, महिमा तुव है अशेष।
कोटि कोटि मुनिमणि की, तू ही है खनियां ॥७॥
तुव छबि अद्भुत अपार, गावत नहिं लहत पार।
नारद शारद महेश, शेष सहस्र फनियां ॥८॥
बिनवौं कर जोरि सेवि, आशिष यह देहु देवि।
पावैं तुव सुत सुराज, सुनहु "रुद्र" बनियां ॥९॥

(प्रस्थान)

जवनिका उद्घाटन।
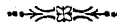
द्वितीय गर्भांक।

"सूत्रधार का प्रवेश"

सूत्रधार--(स्वगत) अहा! आज का आनन्द तो अकथनीय है क्यों न हो शिक्षा तू! धन्य है! कल जहां नाटक को लोग "नाच" अथवा "नकल" कह कर अश्लील एवं गर्हित समझते थे आज केवल विद्या के प्रभाव से इस महारत्न को अपनाने का प्रयत्न कर रहे हैं। जगदीश! यह एकमात्र तेरा ही चमत्कार है! अस्तु! ऐसे अवसर पर जब कि नवसमाज सज्जन दर्शक वृन्द प्रोत्साहित हों तो, समय के अनुसार कोई

१—कविचूरमणि।

वीर रस नाटक खेलना उचित होगा किन्तु (कुछ सोंच कर) हां तनिक-प्रियतमा से भी सम्मति ले लें (पुकारता है) प्रिये! नेक सुनो तो!! क्या कर रही हो (स्वतः) ओह! बड़ा विलम्ब हो रहा है (नैपथ्य में) प्राण नाथ! मैं अभी आई।

"नटी का प्रवेश"

नटी—जीवन धन! कहिये क्या आज्ञा है?

सूत्र—प्रिये! आज के लिये क्या सोचा है? आज कौनसा अभिनय खेलने का विचार है?

नटी—प्राणेश्वर! आपके ही अनुमति में मेरी सम्मति है।

सूत्र—सुमुखे! मेरा विचार तो आज कोई वीररस प्रधान नाटक खेलने का है क्या कोई ऐसा नाटक बतला सकती हो।

नटी—हृदयेश! मुझे तो सम्प्रति हिन्दी में कोई ऐसा नाटक दृष्टि गोचर नहीं होता कि जो एकदम वीररस प्रधान हो।

सूत्र—अस्तु! तो फिर कोई....................

[इतने में एक पटाखे का शब्द होता है और एक जटाधारी योगी सामने आकर खड़ा हो जाता है दोनों प्रणाम करते हैं]

योगी—अभी तुम्हें इस बात की बड़ी चिन्ता थी कि हिन्दी में कौन सा नाटक वीर रस का है? सो यह नाटक अभी नया लिखा हुआ खेलने के योग्य है-अस्तु! आज इसी को खेलना (हाथ बढ़ाकर एक पुस्तक सूत्रधार के हाथ में देता है)

सवैया।

ाच रही अबहीं तोहि तीखन नाटक नागरी माहिं नहीं अस।
र चरित्र लिखो जेहि में, बतरावहुं वेगि सुनो चित दै वस॥

नाम हमीर महारणधीर को गाथकहो सुलहो जगमें जस।
नायक हौ अभिनायक के ममबैन मराल धरो हियमानस॥

(गाते हुये एक ओर चला जाता है)

सूत्रधार—(नटी से) भद्रे! देखा यह कौन थे? इन्हें पहचाना?

नटी—प्यारे! ये तो कोई महान् योगीश्वर जान पड़ते थे।

सूत्र—(पुस्तक का आदि पृष्ट देख कर) वरानने। इसपर तो शिवका चित्र है (अचम्भे से) अरे! तो क्या वे स्वयं कैलाश पती शंकर थे और यह नाटक इन्हींने लिखा है?

नटी—(झुक कर और पुस्तक देखकर) नाथ वास्तव में इसपर तो "रुद्र" लिखा है!

सूत्र—हां प्यारी!! इसी से तो मुझे शंका है यदि यह बात वास्तव में ठीक है कि इसके रचयिता स्वयं आदि नाट्यकार त्रिपुरा सुरारी जग उपकारी महादेव हैं? तो यह समझ रक्खो कि इस विचारे दीन हीन देश भारत का अवश्य उद्धार होगा।

नटी—हां! प्यारे!! अच्छा तो अब आज अवश्य इसी का अभिनय करो और देर न करो, देखो तो दर्शक मण्डली कैसी उत्सुकता भरी कटाक्ष कर रही है।

सूत्रधार—अच्छा तो चलो अब शीघ्रता करनी चाहिये।

(दोनों गाते हैं और एक ओर को चले जाते हैं)

लावनी।

ह्वै गयो दैव अनुकूल दनुज कुलनासा।
अब करहु वीरवर भारत की शुभ आसा॥

लखु प्राची ऊषा काल भयो है भाई।
दिनकर ने अपनी अरुण किरिण फैलाई॥
उठि लागहु उद्यम फेरि अलस बिसराई।
नभ विजै ध्वजा जापान चीन फहराई॥
सो पैहैं दुख दारिद्रहु वेगि विनासा॥ अब०॥
पुनि राम कृष्ण अरु भीष्म हिन्द में ऐहैं।
परताप वीर हम्मीर सुधा बरसैहैं॥
अरु न्याय धर्म्म को थापि अधर्म्म दुरैहैं।
यह जाति केतु हिमशिखर पाहि फहरैहैं॥
तब सब मिलि यहि को वेगि बनैहैं खासा॥ अब०॥
करि सागर लंघन रिद्धि आय इह बसिहैं।
अरु सुन्दर ऐक्य सुबेलि सबै थल लसि हैं॥
यह वैमनस्य अरु फूट मूलसों नसिहैं।
सुनि हिन्दु अनहित हरषाहि शत्रु सब ससि हैं॥
भल ह्वैहैं भारत बीच विज्ञान प्रकासा॥ अब०॥
बस एक धर्म्म व्रत नेम एक सुर जपिये।
हियमांहि 'रुद्र' को ध्यान दिवस निस थपिये॥
नित नूतन प्रेम सुवास वास में बसिये।
प्रफुलित मन मगन निदान रिपुन लखि हंसिये॥
जिय बीच देहु स्वातंत्र मंत्र कर बासा॥ अब०॥

(यवनिका उद्घाटन)

तृतीय गर्भांक।

[स्थान शाही महल, एक सुसज्जित कमरे में शाह अलाउद्दीन एक सुनहरी छपरखट पर एक मखमली मसनद के सहारे बैठा है तीन बेगमें सामने सुनहरी कुर्सियों पर बैठी हैं, बांदियां चव्वर ढुला तथा गानेवाली गा रही हैं]

ना छेड़ो गारी दूंगी रे भरने दे गागरी ॥ टेक ॥
कहां से जलधर आया, मेरे कुवें पै झगड़ा ल्याया,
मैंने क्या रे किसी का खाया रे, भरने दे गागरी ॥
ना छेड़ो गारी दूंगी रे भरने दे गागरी ॥ १ ॥
तू छोड़दे रेसम डोरी, मैं रही हूं कोरी कोरी,
मैं बारह बरिस की छोरी रे, भरने दे गागरी ॥
ना छेड़ो गारी दूंगी रे भरने दे गागरी ॥ २ ॥

(गानेवालियों का गाते २ प्रस्थान)

एक बेगम—जहांपनाह! सुना है कि शिकार में बड़ा मज़ा आता है। पस ! एक मरतबा शिकारगाह में हम लोगों को भी चलने की इजाज़त हो तो ऐनमेहरबानी हो।

दूसरी बेगम—हुजूर! दर अस्ल हम लोगों को शौक़ शिकार ज़रूर है मगर बिलारज़ामन्दी इसे ज़ुबान पर लाना कुसूर है।

शाह—कुसूर है! कभी नहीं जानेमन! मुझे तो बदिलोजां मंजूर है और :—

शैर—मेहरबानी कि तो इसमें है कोई बात नहीं।
ख्वाब में भी तो कभी तुमने न चलने को कहा ॥

चलो जंगल और कोहिस्तान की हवा खिलावें और शिकार का मज़ा दिखावें।

(कहता हुआ उठ कर एक ओर को चला जाता है।)

पटाक्षेप।

चतुर्थ गर्भांक।

"दृश्यपथ" (एक योगिन का प्रवेश)

(स्वत:) अहह! आज कैसाही उत्तम संगठन है जिसे देख इच्छा ती है कि हम अपने नौनिहालों से कुछ विनती करें कदाचित् के दिल पर कुछ प्रभाव पड़ जाय और वह अपने को जानलें हम क्या और कौन थे। (गान आरम्भ करती है)

(राग मांड दादरा)

विनती सुनो तो हमार, भारत के लालना। (टेक)

शैर—जरा सोचो सही पूर्व की कहानी को।
राम लछमन व भरत जानकी महरानी को॥
भ्रात स्नेह जिसने जगत को है बतराया।
दुष्ट राकस के हनन हेतु राज बिसराया॥
क्या गत हुई है तुम्हार, भारत के लालना॥१॥
एक अन्याय ने सौ अंधपूत मरवाए।
धर्म्म थापन के लिये कृष्ण नाम धरिआए॥

पार्थ भीष्म भी इसी भूमि में थे पद पाए ।
और भारत में लाखों तब थे कैसे सुख छाए ॥
पर अब तो हुआ सुख छार, भारत के लालना ॥२॥

शिव दधीच और हरीचन्द नहुष चक्रधारी ।
रघु दलीपादि हुए कैसे कैसे व्रतधारी ॥
गुरुवशिष्ट और विश्वामित्र यहां ही जाए ।
कपिल जैमिन से जहां ज्ञान अनेक फैलाए ॥
वहां बहती अविद्या की धार, भारत के लालना ॥३॥

नृग से दानी व करण जनक से थे यां ज्ञानी ।
अंबरीष और थे दशरथ से जहां जगमानी ॥
दुनियां में और कोई जिनका नहीं था सानी ।
आज उन सब के सुवन की है बुद्धि चकरानी ॥
लखो ऐसी अनैसी अपार, भारत के लालना ॥४॥

वीर विक्रम व चन्द्र और अशोक याहिं पले ।
धीर परताप शिवा गुरु गोविन्द याहिं गले ॥
राजा रणजीत सिंह की हि तुही माता थी ।
दुष्ट म्लेच्छों कि अवस एक तुही घाता थी ॥
वही भारत की आरत पुकार, भारत के लालना ॥५॥
याद सब कुछ है तुम्हें पर हुए हो मतवारे ।
खोके धन मान फिरो जग में योंही रजधारे ॥

लाज अब तुम को नहीं आती है कुछ कहने पर।
साज सब भूल गये मांगते टुकड़ा दर दर ॥
ा मन में तो लेवो विचार, भारत के लालना ॥६॥
चीन जापान रूस जो जगत में जाहिल थे।
पै अपने पैर खड़े हैं हुए जो काहिल थे ॥
पीछे सब के हो पडे तुम को है लाखों लानत।
वीर उठो तो अबहुं देखो देश की हालत ॥
कायर में तेरी शुमार, भारत के लालना ॥७॥
जाति का झण्डा उड़ावो अवश्य ही नभ में।
दुःख भारत का घटावो निदान पग पग में ॥
रौल दुनियां में लगावो सुरा यों पाकर।
"रुद्र" का मान बढ़ावो तुम्हीं हो रतनाकर ॥
गरजी की अरजी अधार, भारत के लालना ॥८॥

(गाते हुए एक ओर को चली जाती है)

यवनिका उद्घाटन।
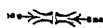
पञ्चम गर्भाङ्क।

[स्थान-शिकारगाह की एक शिविर में शाहंशाह अलाउद्दीन मैं अपनी तीन बेगमों के भीतर बैठा आपस में वार्तालाप कर रहा है]

—क्यों जानां आज तो शिकार में अच्छा मज़ा रहा। देखो हिरन चौकड़ी भरते वक्त कैसा खुशनुमां मालूम होता था

मगर मैंने भी कैसी तेजी का तीर मारा कि एक दम भंन्ना कर ज़मीं बोस होगया।

पहिली बे०—गरीब परवर! बेशक! आपकी की निशाने अंदाज़ी में बाजीगरी का काम था हिरन का निकलना और तीर का छोड़ना भी लाकलाम था किसी ने देखा और किसी ने न देखा, मैंने तो ऐसी निशानेज़नी कभी उमर भर में न देखी (दूसरी बेगम से) क्यों बहिन ठीक है न?

दूसरी बे०—इसमें क्या शक है। मैं तो वाक़ई चकरा गई।

तीसरी बे०—हम लोगों के चकरा जाने की बात ही थी शिकारी लोग बहिन इससे भी ज्यादह क़माल करते हैं।

शाह—दिलरुबा मगर शेर के न निकलने का, अफ़सोस रही गया, अगर्चे आज एक शेर भी सामने आजाता तो अरमाने दिल निकल जाता।

दूसरी बे०—खैर! कल सही, ईंशाअल्लाह! हुजूर की मुराद ज़रूर बर आयगी।

तीसरी बे०—हां जी! अभी तो हम लोगों का यहां क़याम ही रहेगा।

शाह—तो आओ अब आराम करें क्योंकि कल अल्हःसुबह फिर शिकार में चलना होगा।

(एक बेगम का हाथ पकड़ कर एक ओर ले जाते हैं और बाकी बेगम दूसरी ओर को चली जाती हैं)

पटाक्षेप।

षष्ठम् गर्भाङ्क। (चोर महल का द्वार)

[निशीथ रात्रि एक सैनिक सैन्य वेस में सुसज्जित द्वार पर पहरा देता और कुछ गुनगुनाता जाता है पीछे से एक स्त्री आकर बांह पकड़ती है सिपाह आश्चर्य में पीछे फिर कर]

सिपाही—हैं! तू कौन है?

स्त्री—"प्यारे मंगोल मैं हूं! जब से यह तुम्हारा पुर नूर चेहरा देखा है, दामने इश्क में फस कर दिल को हाथों से खो बैठी हूं।

मंगोल—(चकित हो कर) हैं! अरे यह क्या? क्या मैं ख्वाब देख रहा हूं? बेगम साहिबा! यह क्या बक रही हो?

बेग़म—नहीं प्यारे! तुम ख्वाब नहीं देख रहे हो, बल्कि दरअस्ल यह तुम्हारी खादिमा तुम्हारे सामने हैं। देखो!! अब इस नाचीज को अपने सर्द पहलू से लगालो और इस भड़कती हुई आतशे इश्क़ को बुझादो (दोनों हाथ जोड़ती है और पैरों पर गिरना चाहती है)

मंगोल—(दूर हट कर) जहांपनाह! क्या आपको जनून हो गया है? या कि दरअस्ल आप इस नाचीज़ का इम्तेहान लेने आई हैं।

बेग़म—(पास जाकर) कभी नहीं! प्यारे मंगोल मैं तुम्हारी खादिमा हूं भला मैं तुम्हारा इम्तेहान लूंगी! दिलवर मुझे सीने से लगालो, मेरी बात को न टालो!

मंगोल—बेग़म साहेबा! क्या आप मेरी जां हलाकी ही पर एक-

दम आमादा हैं रहम कीजिये ! मैं आपका गुलाम हूं अगर्चे कहीं शाहंशाह सलामत तक यह खबर पहुंची तो क़ब्ले तुलू आफ़ताब मेरा सर तन से जुदा कर दिया जायगा, क्या आप इसी को पसन्द करती हैं ?

बेग़म—प्यारे ! ज़िद्द न करो ! देखो मैं क़सम खाती हूं ऐसा कभी नहीं चाहती । आवो बस देर न करो (लपटना चाहती है)

मंगोल—(हट कर) तौबाह !!! अरे क्या दिवानी हो गई है दूर हो बस इसी में खै़रियत.........

बेग़म—(बात काट कर और चिढ़ाकर) खै़रियत! और मेरी खै़रियत ! अच्छा अगर तू ने मेरे हुक्म को न माना तो अब बस ! तेरे जान की खै़रियत नहीं ! सुबह होते ही अगर तेरी गर्दन जिस्म से अलग न करवा दूं तो मुसल्मान नहीं, दूर हो हरामज़ादे ॥

मंगोल—खै़र ! अगर मरना ही है तो आ (बन्दूक फेंक देता है)

माहरू आके अब सीने से लग जा मेरे ।
लहमा लहमा है मसलता दिले रंजीदा को ॥

[दौड़ कर लपटजाता है (झीना ड्राप) इतने में एक शेर निकलता है और शिविर की ओर बढ़ा चला आता है जिसे देख कर मंगोल उसे एक तीर से मार गिराता है किन्तु परिरंभन नही छूटता ।]

(यवनिका उद्घाटन)

सप्तम गर्भाङ्क।

[स्थान शाही महल एक कमरे में शाह अलाउद्दीन आराम कुर्सी पर बैठा है सामने एक गोल पाषण मेज धरी है जिस पर एक बोतल में सुरा एक सुनहरा प्याला एक जमर्दी तश्तरी में कबाब रखा है, शाह उसमें से कबाब निकाल कर खाता हैं, एक बांदी सुरा ढाल कर देती है शाह उसे पीतेही बदमस्त हो कर सामने बैठी हुई ३ बेगमों में से एक का हाथ पकड़ कर अपनी जानों पर बैठा लेते हैं उसी क्षण एक कोने में एक चूहा निकलता है जिस की आहट से शाह संकुचित होकर कमान पर तीर चढ़ाकर उसे चार पांच तीर में मार गिराते हैं]

एक बेग़म—माशेअल्ला! हजूर की निशाने-अन्दाज़ी तो दरअस्ल कमाल की है।

शैर—कमां पर हाथ क्या रक्खा पयामे मौत पहुंचाया।

दूसरी बेग़म—निगाह बद जिस पै डाली तो गोया दोज़ख को भिजवाया।

वल्लाह! जहांपनाह के इस अचूक निशाने ने तो हैरत में डाल दिया।

तीसरी बेग़म—(हंस पडती है)

शाह—(कुपित होकर) हैं! हँसने का कौन मौक़ा है?

जानती हो इस हेक़ारत से क्या नफ़ा होगा।
यह बात है पोशीदा नहीं इसमें भला होगा॥

(खंजर निकाल कर)

अगर न खुला राज़ तो ये खंजर तेरा गला होगा।

[बेगम शाह का कदम पकड़ना चाहती है शाह उसे ढकेल देता है]

चल दूर हट! समझती हो इसमें क्या होगा॥

तीसरी बेग़म—(हाथ जोड़कर) हजूर! अगर आज मुझे माफ़ी बख़शी जाय तो कल्ह मैं इसका पूरा राज़ हजूर पर ज़रूर ज़ाहिर कर दूंगी।

शाह—क्यों! और आज कहने में क्या हर्ज है?

तीसरी बेग़म—बस! जहां पनाह इसे कल्ह ही पर रक्खें।

[शाह इतना सुन तैश से उठ कर एक ओर को चले जाते हैं दोनों बेगमें पीछे २ चली जाती हैं]

तीसरी बेग़म--नसीर! अरे! वो नसीर।

नसीर—जी हुजूर! हाज़िर है यह हक़ीर।

तीसरी बेग़म--(कुछ कान में कहकर) हां यह ले तुझे इनाम में देती हूं।

नसीर--बहुत खूब हुजूर!

तीसरी बेग़म--लेकिन जल्द जा देर न हो [ख्वाजा एक ओर को बेगम दूसरी ओर को चली जाती है]

पटाक्षेप।

अष्टम गर्भांक। (दृश्यपथ)

(दिल्ली का राज-पथ निशीथ रात्री एक मुसलमान सैनिक अपने पहरे से छुट्टी पाकर अपने डेरे की ओर तेजी से बढ रहा है आगे से एक ख्वाजा आकर सामने खड़ा हो जाता है)

सैनिक—क्यों भाई नसीर! तुमने भी अब छुट्टी पाया है?

नसीर--नहीं मियां मंगोल! मैं तुम्हारी खोज में निकला हूं।

मंगोल—(चौंक कर) कहो भाई खैरियत तो है?

नसीर—ख़ैरियत क्या? हमारी बेग़म साहिबा ने तुम से यह कहला भेजा है कि तुम आज अभी दिल्ली छोड़ कर कहीं चले जावो, वरना कल्ह अलःसुबह तुम्हें फांसी दी जायेगी।

मंगोल—क्यों भाई! कहो तो क्या माजरा है?

नसीर—बस मियां! मैं तो इतना ही जानता था और यही कहने आया हूं। लो अब मैं जाता हूं।

(एक ओर को जाता है)

मंगोल—(स्वतः) वोह! अब मैंने समझ लिया, बात शायद बादशाह के कान तक पहुंच गई। ख़ैर! कुछ फ़िक्र नहीं! चलो रणथंभोर को चलें अगर कहीं दिलावर हम्मीर ने अपने ज़ोरदार बाजुओं के नीचे जगह दी तो इनके दादा भी मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। मगर इसपर एतवार कैसे हो? अच्छा! देखा जायगा।

(कहते हुये एक ओर को प्रस्थान)

यवनिका उद्घाटन।
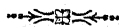
नवम गर्भाङ्क।

निशिथ रात्री, चोर महल के इर्द गिर्द दबे पांव मंगोल चौंकता हुआ घूमता है मंगोल का सिटी वजाना चोर दरवाजे का खुलना बेगम का निकल कर मंगोल से लिपट जाना।

बेग़म—प्यारे मंगोल! बद क़िस्मती से आज यह हमारी तुम्हारी आख़िरी मुलाक़ात है।

मंगोल—बेग़म साहिबा ! यह मैं पहिले ही जानता था कि गुनाह नहीं छिपता मगर ! अफसोस !! कुछ मज़ा नहीं आया बहुत ही जल्द रास्ता खुल गया। खैर ! कुछ परवाह नहीं, मैं तो अपनी जान को हथेली पर रखकर तुमसे आशनाई किया था (स्वांस भर कर) प्यारी ! बेग़म बहुत देर हुई अब मौका नहीं है उधर देखो शुबह का सितारा फौरन ही तुलुअ होने वाला है। ऐसा न हो कि मेरे साथ तुम्हारी भी ज़िंदगी बरबाद हो। जावो मैं भी जाता हूं।

बेग़म-(दामन पकड़कर) नहीं प्यारे ! मुझे अपने पहलू से लगालो, मुझ पर यह इलज़ाम न डालो, मैं ज़रूर तुमसे मिलूंगी इतमिनान रखो।

मंगोल-इतमिनान की अब मुझे परवाह नहीं।

बेगम-क्या तेरे दिलमें मेरी चाह नहीं !

मंगोल-चाह ? चाहने वाली के साथ हैं और मेरा यह खाली हाथ है।

बेग़म-ख़ैर ! किधर और कहां जाता है कुछ पता दे।

मंगोल-जहां तक़दीर ले जाय।

बेग़म-कुछ ज़ुबान से इरादा तो ज़ाहिर कर।

मंगोल—किसको ग़र्ज़ है जो अपनी जां हलाक़ करे, बैठे बिठाये फ़िज़ूल में दमनाक करे।

बेग़म—क्या मुझसे कुछ धोखा हुआ ?

मंगोल—नहीं ! नहीं !! अपनी बद्फेली का मज़ा पाया।

बेगम—तो क्या अब तू मुझसे बताना नहीं चाहता?

मंगोल—खैर ! जो कुछ और दिल पर गुज़रेगा उसे भी सह लूंगा ! सुन ले-

(गाना-धुन-मज़ा देते हैं क्या यार)

अब तो जाताहूं थम्भोर, जान मन पड़े जान के लाले।
है हम्मीर दिलावर शाह, जिसको ज़रा नहीं परवाह ॥
हठ वह करै हस्ब दिलख्वाह, उसको चलूं सुनाऊं नाले।
दिल में यही क़स्द है ठाना, रन थम्भोर एक दम जाना ॥
जाके अपनी अर्ज़ सुनाना, यानी करदूं जान हवाले।
अगर्चे उसने दिया पनाह, तो है शुक्र खुदा हरगाह ॥
बस मैं फिर इन्शा अल्लाह, करूंगा शाहा के मुंह काले।
अब तो जाताहूं थम्भोर, जान मन पड़े जान के लाले ॥

(तलवार खींच कर तेजी से जाना चाहता है)

पटाक्षेप।
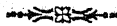
द्वितीय अंक ।

प्रथम गर्भाङ्क ।

(यवनिका उद्घाटन)

[स्थान रनथम्भोरगढ राजसभा लगी है सन्मुख महाराज हम्मीरदेव सिंहासन पर विराजमान हैं दक्षिण तथा वामपार्श्व में परिजन परज रीत्यानुसार कुरसियों पर बैठे हैं और सब दरबार ठसाठस भरा हुआ और शान्त है]

महाराज—(वामपार्श्व में बैठे हुये एक सभासद से) भला क्यों कवि जी यह हमारी भारत वसुन्धरा भी कभी इन दुष्टों से निर्वीज हो कर सुख और शान्ति पावेगी ?

कवि—महाराज ! अवश्य !! यह कवियों की वाणी कभी मिथ्या ही नहीं हो सकती, सुनियेः-

घनाक्षरी ।

आवैगो सुकाल भाल भारत को नीको पुनि,
दुखन समूह मूल सोंही नसि जावैगो ।
जावैगो दरिद्र द्वेष विदिशन में भाजि जबै,
लै सुराज रिद्धि हिन्द मध्य फैलावैगो ॥
लावैगो कौशल कला को फेरि भारत में,
"रुद्र" की सौं नेह मेह घिरि आवैगो ॥
आवैगो राम कृष्ण भीष्म प्रहलाद ध्रुव,
जावैगो बिसासी ऐसो फेरि दिन आवैगो ॥

सब दरबारी—(एक स्वर से) वाह! वाह !! वाह !!! धन्य है।

(तारीफों की झड़ लग जाती है इत्यादि)

महाराज—वास्तव में इस कविता ने तो मुझे बड़ा सांत्वनित किया। क्यों न हो "कवयः किमन पश्यन्ती"

मन्त्री—महाराज! सत्य है। साहित्य ही से तो संसार है, देखिये जिस देश की साहित्य ऊंची है वही देश उन्नत पथ-गामी हो सकता है।

महाराज—(मन्त्री से) निःसंदेह मन्त्रीवर! यह तुम्हारा कथन यथार्थ है। अच्छा तो इस कविता के पारितोषिक में हमारे कवि जी को एक लक्ष्य स्वर्णमुद्रा कोष से दिलवादो, इस कविता ने तो मेरे चित्त को मुग्ध कर दिया (कवि जी से) महाराज! नेक इसे फिर से तो पढ़िये।

कविजी—(इसे पुनः दुहराते हैं) आवैगो.........................

महाराज—(मन्त्री से) देखो मंत्री जी! इस कविता में कवि ने कैसा भविष्य का चित्र दरसाया है कि जो अकथनीय है।

मंत्री—हां महाराज! फिर कवि ही तो ठहरे !! अच्छा तो मुद्रा यह उपस्थित हैं इसे लीजिये।

महाराज—(थैली उठा कर कवि को देते हैं और कवि उसे लेकर एक स्थान पर धर के अंजुली बांध कर खडे होकर)

कविजी—(सोरठा)

चिर जीवहु सुख रासी, अचल कीर्ति महि में लहहु।
दुष्ट दनुज कुल नासी, निर्भय राज्य बढावहु ॥

(और पुनः अपने स्थान पर जाकर बैठ जाते हैं)

विदूषक—(अट्टहास्य करके) महाराज ! ये सब तो भवो पर......
(नृत्यकी की ओर इशारा कर) इन को भी कछू दुन पुन्न होनी चाहिये, आप सब तो जाने का बक गए मेरे तो कछू ख्याल में नायँ आयो मोकूं तो कछू नाच गान हो वे कछू छका छकी की होय तो भलो लगै और नायँ तो लो मैं जात हौं
(उठ कर जाना चाहता है)

महाराज—(हाथ पकड़ कर बैंठाते हैं) आप क्यों इतना उकताय जाते हैं? लीजिये अब आप ही का मनोरंजन होता है ।

विदूषक—अरे मनोमंजन और मनोभंजन तो मोकूं कछू जान नाँय परै, ह्यां तो स्वारथ को संसार है छोड़ मोकूं,
[हात छुड़ाता है]

महाराज—[मन्त्री से] मन्त्रीवर ! अब नृत्यकी को उठाइये देखिये हमारे चौवे जी रिसाये जाते हैं ।

मन्त्री—महाराज ! जो आज्ञा ।

[बन्दी को ओर नृत्यकी के उठने के लिए इशारा करते हैं और बन्दी साजिन्दो को उठने के लिये इसारा करता है और नृत्य की उठकर गान आरम्भ करती है]

गान ।

"हमने देखी न सुनी ऐसी फिसूंगर आंखें"

[गान आरम्भ होते ही महाराज मंत्री की ओर देखते हैं मंत्री सैन समझ कर बन्दी को गान बदलने के वास्ते इशारा करते हैं बन्दी गान बन्द करने को हाथ उठाता है और नृत्यकी गान बंद कर देती है]

एक दरबारी-[दूसरे से] भाई बलबीर ! देखते हो हमारे महाराज

मातृ भाषा के कितने प्रेमी हैं कि अन्य भाषाओं के गान तक से अरुचि है।

बलबीर-वास्तव में! भाई महाराज मातृ के महत्व को खूब समझते हैं तब फिर क्यों न इसके पक्षपाती हों।

तीसरा दरबारी-अरे मित्र सच पूछो तो मातृ भाषा ही तो देश का जीवन है। देखो आज जो यह दुर्दशा इस अभागे भारत की देख रहे हो। यह केवल मातृ भाषा के भूलने ही से और यही कारण है कि हमारे महाराज भी इसको अपनाये बैठे हैं। वरन इसके प्रचार का प्रयत्न कर रहे हैं।

[गान पुनः आरम्भ होता है]

चौथा दरबारी-[जाचक वृन्द की ओर देखकर] सुनोजी! तुम लोग तो न जाने क्या गव गव गव गव लगाए हो अरे जरा इधर भी ध्यान दो (गायका की ओर देखकर)

गाना।

जयतु जयतु वीर हम्मीर, जगत मांहिं समर धीर।
शत्रु देखि तुव प्रताप, उठत मनहिं आप कांप॥
हे हम्मीर धारि धीर, करहू नाश अरि शरीर।

(एक चोपदार आकर सामने खड़ा होकर प्रणाम करता है)

बन्दी—महाराज की जै होय। दिल्ली से एक मुसलमान गरीब, दीन, शाह अलाउद्दीन का सताया महाराज की शरणागत है।

महाराज—(चौंककर) शरणागत्? कैसा शरणागत्?

बन्दी—श्री हुजूर की शरणागत्।

महाराज—(बंदी से) अच्छा तो उसे यहां बुला लावो (मंत्री से) मंत्रीवर, क्षत्रियों का धर्म है शरणागत् को शरण देना, न देने से अपयश का भागी होता है। परन्तु यह अलाउद्दीन का सताया हुआ मेरी शरणागत् आया है! कुछ छल छिद्रम तो नहीं है?

मन्त्री—महाराज! यह तो उसी से विदित हो जायगा।

(बंदी एक मनुष्य को लिये आकर दरबार में उपस्थित होता है)

आगन्तुक—(सलाम करके सामने खड़ा होता है)

महाराज—(आगंतुक से) तुम कहां से आए हो और तुम्हारा क्या नाम है?

आगन्तुक—हुजूर! मैं दिल्ली से आया हूं और मीरमंगोल मेरा नाम है।

महाराज—तो फिर यहां किस लिये आए हो?

मंगोल—बस हुजूर के क़दमों में पनाह लेने आया हूं।

महाराज—क्या शाह अलाउद्दीन तुम्हारे लिये कम है?

मंगोल—सरकार अब उस दरबार में बड़ा सितम है।

महाराज—अच्छा तो तुम क्या चाहते हो।

मंगोल—अब हुजूर ही पर एतबार है अगर और कहीं जाऊंगा तो हुजूर मारा जाऊंगा।

महाराज—(आश्चर्य से) क्या कोई ऐसी ग़लती की है?

मंगोल—महाराज! बल्कि उसकी इज़्ज़त ली है।

महाराज—अच्छा! तो अब हमने समझा तुम वहां से भागकर

आए हो। और यहां शरण चाहते हो, अस्तु! कुछ चिन्ता नहीं। अशरण को शरण देना क्षत्रियों का मुख्य कर्तव्य है (कवि जी की ओर देखकर) क्यों कविजी! है न ठीक?

कविजी—हां, महाराज! श्रीमान् का कथन यथार्थ है देखिये! कहा भी है—

(उल्लाला)

अशरण शरण न देहीं जे, ते नृप पावहीं घोर दुःख।
नरक यातना सहहिं अस, कबहुं न जगविच लहहिं सुख!!

महाराज—ठीक है! यह तो क्षात्र धर्म ही है (मंगोल से) अच्छा! कुछ चिन्ता नहीं यद्यपि तुम मेरे घोर शत्रु अलाउद्दीन के सेवक हो किन्तु! अब मेरी शरण आए हो तो हम भी यह प्रतिज्ञा करके कहते हैं कि वह तुम को हमसे कभी न पावेगा और कदापि नहीं पा सकता। देखो:—

(आवेश के साथ हाथ उठाकर)

मू. अ. (छप्पै)

उगै भानु पश्चिम प्रतच्छ दिन चन्द्र प्रकाशै।
उलटि गंग बहु बहै काम रति प्रीति विनाशै॥
तजै गौरि अरधङ्ग अचल ध्रुव आसन चलै
पौन होय वरु मौन मेरु मंदर गिरि हल्लै॥
सुखारु सुखाय लोमस मरै, मीर शंक सब परिहरै
मुख बचन वीर हम्मीर को, बोलि न यह बहुरो टरै॥१॥

खसै भानु विम्मान, विकल तारा ससि झम्पै।
अचल अवनी अस्मान दसौ दिसि थर २ कम्पै ॥
गज्जै घन घन घोर जोर मारुत सब चल्लै।
शंकरषण फुंकरै कालहुं करै उत्तल्लै ॥
मरजाद छोड़ि सागर चलै, कहि हम्मीर परलै करन।
अलाउद्दीन पावै न तौ, मैं मंगोल राख्यो सरन ॥२॥

(स्व० र०) साह अलाउद्दीन, रूप धरि कोटिन आवै।
एकै नाहिं अनेक कला कौशल दरशावै ॥
चाहौ विनती करैं चाहौ लरबे कूं धावै।
सागर सों बरु उमिड़ सैन्य अगणित संग लावै ॥
पै तबहूं न तोंहि निसारिहौं शरण देहुं मंगोल सुनु।
यह हठ हम्मीर तें जानियतु, त्यागु भीरुता वीर तनु ॥

मंगोल—(झुककर सलाम करके) बस महाराज! मैं बे खौफ़ हुआ।

महाराज—(मंगोल से) मन्त्रीवर! इन के ठहरने के लिये कोई उचित स्थान दो, और कोष से ५ सुवर्ण मुद्रा इन के व्यय के लिये नित्य दिलाया करो और जब कोई स्थान खाली हो इन्हें नौकरी दी जाय। (कहते चले जाते हैं)

मन्त्री—जो आज्ञा! (कह कर सब महराज के पींछे २ जाते हैं)

(पटाक्षेप)

द्वितीय गर्भांक।

[दृश्य-पथ, एक कपालिक उछलता कूदता आता है
और कुछ बकता जाता है]

कापालिक--भइ आहा हा, हा ! भई अहो हो हो !

तग्गुडी नगारा बाजै सखुआ कै लकड़ी।
हम्मीर क तरुआरी बाजै कटै दुष्ट की खोपड़ी॥

मगर नहीं भाई * * * खैर कुछ परवाह नहीं * * अच्छा तो, कुछ गान करें, दुख दारुन का अवसान करें, नहिं तो फिर तान भरें, अजी वाह वाह वाह वाह वाह वाह !

[एक ग्रामिण वेषधारी मनुष्य गाते हुए आता है कपालिक देख कर
वही छिप जाता है]

(गान रागपूर्वी)

आनन्द कन्द प्रभु बेगी बचावो, कोउ नहीं राखन हार हो।
दुख दधि में यह जीरन नैया, हा ! कर बहत बयार हो।
संकट केवट ताहि खेवैया, हिन्द पड़ा मझधार हो।
उद्यम हीन भए नर नारी, आलस से मतवार हो।
निज बिसारि भिखारि बने अब, डोलत हैं महिभार हो।
एक ओर दारिद राकस दौरे, दूजे ओर द्वेष विकार हो।
तीजे ओर फूट फरहरा उड़ावै, लख नहिं परत उबार हो।
जब जब कष्ट परयो दीनन पै, तब तब धरि औतार हो।

आए दयानिधि दुक्ख नसावो, अब क्यों करत अवार हो।
आनन्द कन्द प्रभु वेगि बचावो, कोउ नहीं राखन हार हो।

कापालिक--(आगन्तुक से) अरे तू कौन है रे?

आगन्तुक—महाराज! मैं तो आदमी हूं।

कापालिक—और तुझे पशु कौन बताता है। यह तो मैं स्वयं जानता हूं कि तू आदमी है पर यह तो बतला कि तू कौन और कहां से आता है।

आगन्तुक—महाराज! (पैर पर गिर कर) कुछ न पूछो मैं बड़ा भीरु हूं मेरा घर रनथम्भोर में है और मेरानाम है यशवन्त सिंह। बात यह है कि हमारे महाराज हम्मीर देव ने एक दिल्ली के बादशाही मुजरिम को अपने यहां शरण दी है मैं इसी सोच में वहां से भाग निकला कि अब यवन सैन्य अवश्य थम्भोर को विना नष्ट प्रायः किये न छोड़ेगी अस्तु! बड़ा दुखी हूं।

कापालिक—हत्त तेरे की! क्षत्री का बालक और तिस पर भी वीर हम्मीर की प्रजा होकर रण से परांगमुख? धिक्कार है! तेरे जीवन को, जा और अपने स्वामी की सहायता कर! क्या तुझे यह नहीं विदित है कि हम्मीर इस संग्राम में विजई होगा।

(इतने में एक बड़े ज़ोर का धड़ाका होता है कापालिक अन्तर्धान हो जाता है यशवन्त सिंह घबड़ा कर एक ओर को भाग जाता है)

(यवनिका उद्घाटन)

तृतीय गर्भांक ।

(शाही आलाउद्दीन तथा दरबारीगण अपने २ स्थान पर विराजमान हैं नृत्यकी नाच व गा रही हैं)

(गान-राग-ग़ज़ल)

शौके़ दीदार ने दीवाना बनाया मुझ को ।
पै अबस यार ज़रा रहम न आया तुझ को ॥
है नहीं चैन ज़रा दिल है मसलता हरदम ।
हैफ़ ना गुफ्ता क्यों ऐ यार फसाया मुझ को ॥
भूलती है न कभी ख्वाब में सूरत तेरी ।
जाने-मन हाय जो गर्दिश ने घुमाया मुझ को ॥
माहरु अब तो ज़रा दिल को तसल्ली देता ।
इश्क़ के बहर में क्यों हाय ! डुबाया मुझ को ॥
धोखा इस तौर पै "शैदा" को न देना लाज़िम ।
खैर अच्छा ही किया खूब जलाया मुझ को ॥

(नृत्य बन्द होता है दो बन्दी सामने आकर उच्चस्वर से)

१ला बन्दी—तेरी शान जल्ले जलालहू,
तेरी आन वस्फे कमालहू ।
नहीं कोई तेरी मिसाल का,
नहिं कोई तेरी जमाल का ।
तू रहे सलामत बज्म में ॥ तेरी शान० ॥

२रा बन्दी—तू है एक फातहे हिन्द का,
कैसर है कैसर हिन्द का ।
तेरा नग्मा गाए नज्म में,
तेरी शान जल्ले जलालहू ।

(दोनों दो पंक्ति में जाकर खड़े हो जाते हैं)

शाह—(वज़ीर से) वज़ीर! क्या कोई सिपाही मेरे यहां मंगोला नाम का है ?

वज़ीर—हुजूर यह तो मन्सबदार से दरयाफ्त करने पर मालूम हो सक्ता है (मन्सबदार से) क्यों मनसबदार साहेब ! हुजूर क्या फरमाते हैं ? जवाब दो ।

मनसबदार—जहांपनाह ! हां ! ज़रूर मेरे यहां एक दिलावर सिपाह मीर मंगोल नाम का है ।

शाह—उसे फौरन दरबार में हाज़िर करो ।

[मनसबदार एक सिपाही से इसारा करते हैं और सिपाही एक ओर को चला जाता है]

शाह—(वजीर से) वज़ीर तुम जल्लादों को फौरन बुलवावो क्योंकि आज उस नमक हराम की गर्दनकशी में अपने सामने कराऊंगा ।

वज़ीर—जो इर्शाद (एक बन्दी को इजाज़त देते हैं)

[इतने में वही सिपाही आकर शाह को झुक कर सलाम करता है)

शाह—(उसी सिपाही से) क्यों ? क्या मंगोल नहीं आया ?

सिपाही—(दोनो हाथ जोड़ कर) हुजूर! मंगोल, आज तीन दिन से ग़ैरहाज़िर है और इतना ही नहीं बल्कि वह लापता है।

शाह—(गुस्से से) यह सब सुना नहीं जायगा चाहे जहां से हो! जल्द हाज़िर करो वरनः तुम लोगों की इसमें खैरियत नहीं है।

(इतना कह कर एक ओर को चले जाते हैं सब दरबारी उठकर ताज़ीम देते हैं और पुनः बैठ जाते हैं धीरे २ परस्पर कुछ बातें करते हैं)

वज़ीर—(उच्च स्वर से) क्या कोई इस दरबार में इस की जिम्मेवारी उठा सकता है कि सिर्फ इस बात की खोज लगादे कि मीर मंगोल कहां है। जो कोई उसकी सुराग़रसानी करेगा उसको ४०००) मुहरें बतौर इनाम के दी जावेंगी।

(तीन मनुष्य सामने आकर)

तीनों—हजूर! अगर हम लोगों को इजाज़त मिले तो * * *

वज़ीर—(बात काट कर) हां हां बेशक तुम लोग शौक़ से जा सकते हो। अच्छा! यहां आवो। देखो इसका बहुत जल्द पता लगाकर खबर दो। यह बतौर खर्च के दिया जाता है।

(पास बुलाकर कुछ देते है और विदा करते हैं)

पटात्तेप।

चतुर्थ गर्भाङ्क।

(दृश्य-पथ, तीन मुसल्मान परस्पर वर्त्तालाप कर रहे हैं)

पहिला—भाई जुम्मन! मीर मंगोल तो बड़ा दिलावर शख्स

था लेकिन न जानें क्यों भाग निकला, कुछ माजरा नहीं मालूम होता।

ज़ुम्मन—मियां सलारू ! तुम्हारा कहना तो बहुत ठीक है पर हम लोगों से क्या मतलब, बातों से तो यह साफ मालूम होता है कि उसने कोई भारी ग़लती की है। क्यों नब्बन ?

नब्बन—उँह ! होगा जी हम लोगों से क्या सरोकार हम लोगों को तो उसका सुराग लगाना है कुसूर उसूर से क्या मतलब ?

सलारु—तो फिर यही तैं करो कि कहां चलना होगा ?

ज़ुम्मन—भई ! मुझे तो पूरा यक़ीन है कि वह सिवाय रन थम्भोर और कहीं नहीं मिलेगा।

नब्बन—बेशक ! तुम्हारा ख्याल दुरुस्त है उसने ज़रूर हम्मीर के यहां पनाह ली होगी और है ही ऐसा दिलावर कौन ? जो कि शाही मुजरिम को पनाह दे कर एक नई आफत खरीदे, बस मैं तो यही राय दूंगा कि पहले वहीं चल कर दरयाफ्त करो ! फिर देखा जायगा।

तीनों—बस बस तो अब वहीं चलो।

१ला—हम सब उसे जल्द अब खोज लाएं।
शाहा को यह राज़ चल के सुनाए ॥

२रा—यह खुशख़बरी हम उनको बतलाएँ।
मंगोल की जिसमें आएं बलाएं ॥

३रा—लै लै के मुहरें घर को सिधाएँ।

जोरू के अपने गहने गढ़वाँए ॥

सब—बस अब न इस में देर लगाएँ।

(गाते हुए प्रस्थान)

(यवनिका उद्घाटन)

पंचम गर्भाङ्क।

(शाही दीवान खास शाह अलाउद्दीन एक सुनहरी कुर्सी पर बैठा है सामने कुछ मुसाहवीन मखमली फर्श पर बैठे हैं)

शाह—(एक मुसाहब से) क्यों वज़ीर तुमने मंगोल की गिफ्तारी के लिये कोई माकूल इन्तेज़ाम किया ?

वज़ीर—हुजूर ! तीन जासूस उसके सुराग के लिये तैनात कर दिया।

(एक चोबदार का प्रवेश)

चोबदार—शाहंशाह सलामत की दौलतदराज़ हो ! तीन जासूस जो मंगोल की खोज में गए थे दरे-दौलत पर हाज़िर हैं।

शाह—उन्हे यहां ले आवो।

(तीनों आकर झुककर सलाम करते हैं)

शाह—जुम्मन ! तुम कुछ कर आए या योंहीं हाथ हिलाते आए।

जुम्मन—हुजूर ! हाथ हिलाते क्यों आए बल्कि उसका सुराग लगा लाए।

शाह—तो वह नाबकार कहां है ?

नब्बन—हुजूर ! अब वह वीर हम्मीर का नमक ख्वार है ।

शाह—तो क्या हम्मीर ने उसे अपने यहां पनाह दी ?

नब्बन—जहाँ पनाह ! बलिक उसने अपने सर पर एक आफत ली ।

शाह—बेशक ! अच्छा तो खैर देखा जायगा (वजीर से) वज़ीर ! इन लोगों को इनाम के अलावा एक एक वेश कीमत दुशाला बतौर खिलअत के दो ।

(वज़ीर एक चोबदार को इशारा करते हैं और चोबदार पांच पांच मुहर और तीन वेश कीमत दुशाले लाकर रख देता है वजीर उसे तीनों को देकर बिदा करते हे शेर पढ़ते हुए जाते है)

पहिला—ये नाज़दार चमन, हिन्द की अरमां निकले ।

दूसरा—क़ाफ़िरों के दिल तारीक से फिगां निकले ।

तीसरा—खुदा करे इन हिन्दुओं की जां निकले (जाते हैं)।

शाह—(वज़ीर से) लाहौल विला कूवत । वज़ीर देखते हो इस क़ाफिर की सीनाज़ोरी इसका नाम है ज़िद "बांड़ी बछेड़ी और बाघों से नज़ारा" खैर ! कुछ परवाह नहीं एक मरतबा उस नादान को आगाह कर देनाही हमारा फर्ज़ है लेहाज़ा तुम अभी एक परवाना थम्भोर भेजो जिसमें लिखो कि "वह मंगोल को भेज दे और इसके इलावा मेरे मुजरिम को पनाह देने की इलज़ाम के जुरमाने में वह अपनी लामिसाल हसीना माहजबीं दुख्तर मुस्म्मात "देवल कुमारी का डोला दे इसी में खैरीयत है" वरना अपनी वदगुमानी की सज़ा के लिये तैयार हो जाय !

वज़ीर—जो इर्शाद हुजूर ! (इतना कहते हुये शाह उठते है और सब उनके पीछे पीछे एक ओर चले जाते हैं)।

(यवनिका उद्घाटन)

षष्टम् गर्भाङ्क ।

(स्थान रन थम्भोरगढ़ एक सुसज्जित कमरे में महाराजाहम्मीर बैठे हैं पीछे एक बहु मूल्य मसनद पडी हैं इधर उधर पंक्तिबद्ध कुछ सभासद खड्ग धरे वीरासान बैठे हैं सामने पांच सहेलियों का नृत्यगान हो रहा है)

(गान—राग वरवा)

जुग जुग जियो महाराज हमारे,
भारत दुख छिन माहिं निवारे ।
तेज प्रताप बढ़ै तुव जग में,
हिंदुअन के नैनन के तारे । जुग २
दुष्टन हिय हहरै निसु वासर,
डर पैं तुव डर सांझ सकारे । जुग २
तेरो हठ निश्चल त्रिभुवन में,
बैरी भल जरि सोंहिं उपारे । जुग २

(बन्दी का प्रवेश)

बन्दी—(झुक कर प्रणाम करता हैं) **महाराज की जै होय ! खट्टवन से से दो ग्रामीण आए हैं और महाराज का दर्शन चाहते हैं ।**

महाराज—उन्हें यहां ले आवो । (वन्दी जाता है और उन्हें साथ लेकर पुनः प्रवेश)

[दोनों आकर साष्टाङ्ग दंडवत करते है]

महाराज—(आगन्तुकों से) क्यों ! तुम लोग आज कहां चले ?

आगन्तुक—सरकार मोरे गाम में एक बड़ा बाघ आवत है से प्रजा बड़ा दुख पावै है ।

महाराज—तुम लोग आज जावो मैं कल्ह स्वयं खट्टवन आऊंगा और उनका आहेर करूंगा (मंत्री से) मंत्रीवर ! आप कल्ह प्रातः काल ही मेरे जाने का प्रबन्ध ठीक रखियेगा ।

मंत्री—जो आज्ञा राजन् ! (हाथ जोड़ कर)

[दोनों आगन्तुक का प्रस्थान]

(पुनः वहीं सहेलियां आकर नृत्य गान आरम्भ करती हैं)

(गान-राग दादरा)

महाराजा के जग में यश गाये जाएंगे ।
वे तो भूले मनुज को दरसाए जायँगे ॥

शैर-कहेंगे लोग कि हम्मीर एक दिलावर था ।
व मातृ भूमि की रजमात्र पै निछावर था ॥
हठी था वीर व गम्भीर था गुनी के लिये ।
दान में कर्ण व विकर्ण था अनी के लिये ॥

जशगाय, गुनगाए, समझाए जायँगे ॥

छत्रियों ने उसे निज छत्रपति माना था ।
वैरियों ने उसे बलवीर शत्रु जाना था ॥

जन्म भूमिका गुमां उसके रक्त में था सना ।
अपने जीवन में उसने और किसी को न गना ॥

जो गाएंगे इसको बल पाय जायँगे ॥

(नृत्य बन्द होता है पुनः एक बन्दी का प्रवेश)

बन्दी—(झुक कर प्रणाम करके) महाराज की जै हो ।

(भुजंग प्रयात)

नवावौं तुम्हें माथ ओ राज मेरे ।
दिल्ली से हैं आए सिपाही घनेरे ॥

महाराज के देखने के भिलाषी ।
मिलै मोहिं आदेश मैं जाय भाषी ॥

महाराज—(मंत्री से) क्यों मंत्री ! यह सिपाही कौन हैं ?

मंत्री—महाराज ! कदाचित वही मीर मंगोल के बारे में आए होंगे

महाराज—(बीर भाव से) कुछ चिन्ता नहीं ।

(मू० ग्रं०)

सिंह सुवन सुपुरुष बचन कदली फरै इकबार ।
तिरया तेल हम्मीर हठ चढ़ै न दूजी बार ।

(बन्दी से) आने दो देखें क्या समाचार लाए हैं ।

(बंदी का प्रस्थान और पुनः ५ मुसलमानों को साथ लेकर प्रवेश)

महाराज—(आगन्तुक से) आइये मनसबदार साहेब, कहिये शाह अलाउद्दीन सब प्रकार कुशल से हैं।

सरदार—महाराज ! शुक्र खुदा का शांहशाह सलामत बफ़ज़लहुताला, खैरियत से हैं, मुझे एक परवाना रुबरु हुज़ूर पेश करने की इजाज़त हुई है लेहाज़ा इसे लीजिये (हाथ बढ़ा कर एक लिफाफा देता हैं)

[मंत्री उसे ले लेते है और उसमें से पत्र निकाल कर पढ़ते हैं और पढ़ते पढ़ते क्रोध से लाल हो जाते है)

मंत्री—(महाराज से) महाराज ! यदि आज्ञा हो तो मैं इसे फाड़ कर फेंक दूं ?

महाराज—क्यों !

(महाराज उनके हाथ से लेकर पढ़ते हैं और क्रोधित हो फाड़कर फेंक देते हैं)

महाराज—(सरदार से) क्यों सरदार ! यह पत्र लाते समय तुम्हें और तुम्हारे शाहंशाह को कुछ भय नहीं आया था, शोक ! कि आज तुम एक दूत हो कर आए हो नहीं तो अभी ....अस्तु नहीं ! नहीं !! यह क्षत्रियों का धर्म नहीं है। किंतु जावो और........अच्छा तो अब यहां से एक दम चले जावो, बस—

शैर—जाकर शाह से मेरी बात यही कहदेना।
और कहूं जो कुछ उनके दिल में भर देना ॥
चाहता हूं मै अलीखां को साइसी में।
मीर पंगोल की माशूकः को खवासी में ॥

सरदार—महाराज! मैं आप की गुफ्तगू शाह से हर्फ़ बहर्फ़ कह दूंगा। मगर मेरी यह इल्तिजा ज़रूर है कि हुजूर इतने बड़े शाहंशाह हिन्द से एक ख़फीफ़ बात के लिये रंजिश न ठाने बल्कि जहांपनाह ने जो कुछ भी लिखा हो उसे बसरोचश्म बजालावें।

महाराज—(तमक कर) रे दुष्ट! तुझ को तनिक हया नहीं तू मेरी सभा में बैठ कर भी अपनी नीचता नहीं त्यागता।

सरदार—महाराज! मैं हुजूर का खैरन्देश हूं। इस से मैं फिर भी यही सलाह दूंगा कि आप दस्तवस्ता उनके पास तक चलें और अपने कुसूर मोआफ़ करावें मुझे यह कवी उम्मीद है कि जहांपनाह हुजूर पर ज़रूर रहम करेंगे।

महाराज—(खड्ग हस्त) अब मैंने समझा कि तेरी मृत्यु तुझे विवश कर रही है। किन्तु! फिर भी मैं तुझे एक धावन जान कर छोड़ देता हूं। बस अब सावधान रहना यदि पुनः कुछ मुख से दुर्वाक्य निकला तो कुशल नहीं।

(सरदार मय अपने साथियों के एक ओर उठकर चले जाते हैं और महाराज भी सब दरबारी सहित उठ कर दूसरी ओर को चले जाते हैं)

(पटाक्षेप)

सप्तम गर्भाङ्क।

(दृश्य-सरांय की दालान, सब सिपाही बैठे चिलम पीते और गप्प मारते हैं सरदार एक सिपाही से)

सरदार—देखा शमशेर खां इस हिन्दू का ग़रूर?

शमशेर—दरअस्ल हुज़ूर ! इस क़ाफिर की कम्बख़ती आई हैं।

१ सिपाही—बेशक, बेशक, ख़ैर ! इनशाअल्लाः हम जीते रहे तो ज़रूर इन्हें जंग का मज़ा चखावेंगे ।

सरदार—ज़रूर, ज़रूर, यह मेरी कवी राय है कि इसके किरदारी की सज़ा शाहंशाह सलामत को देना लाज़िम है । वरनः "खरबूजे को देख कर खरबूजा रङ्ग बदलता है" एक रसी को देख कर तमाम हिन्दू ऐसी ही बदज़ाती पर आमादा हो जावेंगे । देखो "एक मछली तमाम ताल गन्दा कर देती है" सुना शमशेर !

शमशेर—फिउलवाक़ई ! हुज़ूर का कहना बजा है मगर मेरी दानिस्त में शहंशाह सलामत इस हर्कते-नाशास्ता को सुन कर चुप बैठे रहेंगे? यह कब मुमकिन है ? देख लीजियेगा, हुज़ूर के यहां पहुंचते ही सोलेआतिश भड़क उठेगा ।

२ सिपाही—ख़ैर ! कुछ हर्ज नहीं ! खुदा करे कुछ जंगो जदल की नौबत तो आवे ? बहुत दिनों से बेकार बैठे हैं और कुछ नहीं तो मुफ्ती का माल तो लूटेंगे ।

सरदार-नब्बन ! तुमने भठियारिन से हम लोगों का खाना बनाने के लिये कहा था न ?

नब्बन—कह तो दिया था, मगर ज़रा वह है बड़ी तेज़ चमक घर में चली गई ।

सरदार—मालूम होता है तुम्हारे कहने पर उसने कुछ ख्याल नहीं किया ? ख़ैर ! मैं देखता हूं कम्बखत क्या कर

रही है (सरदार जाना चाहता है कि इतने में मिज्जू खां शराब की बोतल लिये आ जाता है शराब पीना सब शुरू कर देते हैं)

मिज्जू-(एक गिलास भर सरदार को देकर) सरदार साहब ! यह वह साकी शराब है कि एक गिलास में मय की दरिया नज़र आती है।

नब्बन—और दूसरे में ग़ोते दिलाती है।

खुदगर्ज़—अबे तीसरे में तैरते नज़र आयेंगे—

सरदार—(मुंह में बोतल लगाकर और नशे में होकर) और चौथे में ?

मिज्जू—(पीछे देखकर) चहार दरवेश की तरह मांगी मुराद पायेंगे।

नब्बन—वाक़ई में कोई हसीन माशूका आ रही है खामोश !

भठियारिन-सिपाही साहब ! खाना पीना खाइयेगा या सूखा ही मौज़ उड़ाइयेगा ?

खुदगर्ज़खां—आइये बेगम साहिबा ! आपने भी अच्छी खाने पीने की बातें चलाई। " नामी मरे नाम को और पेटु मरे पेट को " आपके दरवाज़े पर ऐसे २ जवांमर्द बहादुर सिपाही आये हैं कुछ कद्र करो यानी बैठो कुछ मुहब्बताना बात चीत तो होने दो।

भठियारिन—(चमक कर) क्या कह रहे हो ! क्या कह रहे हो !! ज़रा होश में तो आवो।

नामर्द खां—होश में क्या आयें। बीबीसाहिबा आपकी आदायें भरी नज़ाकत से और ये शीरीं ज़ुबान की लताफत से, कुल सिपाही जोश में आये हैं।

४

मिज्जू—कसम अल्लाह की! जानेमनके चुडिदार पायजामे, ये बिखरे हुए बाल, और काले काले तिलवाले..........., वाक़ई में किये देते हैं हलाल।

भठियारिन—चल! मुये चुहड़ा दल्लाल, पहिले अपना मुँह तो सम्हाल?

खुदग़र्ज़ खां—(स्वगत) मामला बिगड़ गया अब दूसरा चकमा कसना चाहिये (प्रगट) अए नेक खसाल, किसी की क्या है मजाल, जो तुम पर बुरी निगाह सके डाल, मैं तो योंहीं हंसी में उड़ाता था, आपको आजमाता था, आप क्या मज़ाक में बुरा मान गई? क्या हमलोगों के दयानत को वाक़ई सच्चा जान गई?

नामर्दखां—बीबी साहिबा! मेरे ख्याल को अगर आप ग़ौर फरमायेंगी तो ज़रूर ही आप एस. एस. कर जांयगी।

खुदग़र्ज़ खां—आइये! [हाथ थामकर एक ओर ले जाकर] यह सब जितनी बातें थी कुल आपके खाविंद के उपर घातें थीं। भला आपकी शान में कौन कह सकता था। मैं सिर्फ़ यही समझता था जैसे मियां हैं वैसी ही बीबी भी होंगी?

भठियारिन—वह क्या?

खुदग़र्ज़—उसके मानी यह हैं कि जब तुम्हारा खाविंद हुक्का लाया और हमलोगों से बात चीत कर रहा था, इतने में एक हसीन, महजबीन, कमसीन, पान खाये, सुरमा लगाये, उस दरख्त

के पास खड़ी खड़ी इशारा करती थी, कभी सीने पर हाथ रख आह भरती थी कि इतने में आपके मियां की जो नज़र पड़ी तो मियां साहब चट उसके साथ हो लिये और वह भी नज़ाकत के साथ मिठी २ बातें करते मियां बीबी दोनों इधर चम्पत हो गए। एतबार न हो तो तुम खुद जाकर देख सकती हो। इसी इमतिहान के लिये हमलोग तुम्हें चिढ़ाते थे आज़माते थे लेकिन तुम्हारी बातों से तो साफ़ ज़ाहिर हुआ कि तुम निरी भोली हो?

भठियारिन—ओहो! अच्छा तो मैं समझ गई! क्या तुम्हारा मुझे इतमिनान नहीं है। तुम लोग झूंठ क्यों बोलोगे तुम्हें इसमें क्या नफ़ा है मैं खुद जाकर देखती हूं। जमादार साहब! मुझे भोली न जानना मैं उन्हें ठिकाने लगा देनेवाली उन से एक चासनी बढ़कर हूं।

खुदग़र्ज़—बेशक! अच्छा तो आप फौरन जाइये। (अलग हटकर) यही तो मैं भी चाहता हूं कि तुम्हारी चासनी देखें।

भठियारिन—वहां खाना रखा है आप खाइये। मैं आती हूं।

(भठियारिन जाती है सब खाना ले कर खाते हैं)

खुदग़र्ज़—[सब से] देखा यह बला कैसी टली—अब झटपट खाओ और रास्ता नापो, नहीं तो गले पड़ क्या, लड़ जायगी।

[सब जल्दी २ खाते हैं और मज़ाक भी होता जाता है। इतने में भठियारा दौड़ा आता है]

भठियारा—क्या साहब! क्या इधर मेरी बीबी आई थी?

नामर्द खां—[मुंह फेरकर] एक बला गई तो दूसरी बला पहुंची।

खुदग़र्ज़—हां! हां!! आई तो थीं। (स्वगत) अब इसे भी कोई झांसा पट्टी पढ़ाना चाहिये (प्रगट) वह क्या आपकी बीबी थीं? सच कहना। (हंसता है)

भठियारा—क्या आप दिल्लगी करते हैं क्या?

मिज्जू—हमलोगों से क्यों रुख बदलते हो। जो दिल्लगी करेगा उससे तो आप दुम दबाइयेगा।

भठियारा—अगर मेरे सामने कोई आंख़ हिलाये तो आंख निकाल लें साहब! हम लोग भी इज़्ज़तदार हैं। [सब हंसते हैं]

खुदग़र्ज़—सुनो! सुनो!! मैं सारा किस्सा बयान करता हूं।

भठियारा—क्या हुआ क्या? कहिये तो सही।

खुदगर्ज़—हुआ ऐसा कि आपकी बीबी साहब ख़ाना लेकर देने आईं कि इतने में एक गबरुजवान, किश्तीनुमां टोपी लगाये, अचकन पहिने, जरीका जूता डाटे, पान खाये उस मोड़ से कुछ इशारा कर करके रुपया बजा रहा था ज्योंही तुम्हारे बीबी साहिबा की नज़र पड़ी त्योंही वह सब छोड़ छाड़ उसीके साथ इधर चली गई यह अच्छा तरीक़ा देखा।

मिज्जू—बल्कि यह कहती गई हैं कि मेरे मियां अगर पूछने आवें तो कह देना, वह कुछ सौदा करने गई हैं। अभी जल्दी ही आ जायंगी। देखिये साहब! चोरी और सीना जोरी।

भठियारा—कब गई है हरामज़ादी? मुझे तो पहिले ही से शक़

था तभी तो कम्बख्त मेरे बुढ़वौती में भी इतनी कुलावे से रहती है।

नामर्द—मियाँ साहब! यह क्या तुम्हारे दूसरे शादी की हैं क्या?

भटियारा—नहीं साहब! बल्कि यह चौथी निकाह की है मेरे पास के रिस्तेदार याने मेरे खास मामू की लड़कीहै। अच्छा मैं जाता हूं दोनों की ख़बर लेता हूं। (भठियारा एक डंडा उठा कर दौड़ा जाताहै

खुदगर्ज़—अब ठीक हुआ। बेटा खुदगर्ज़! अब रफूचक्कर हो जावो। (सब से) अब मियां? चल दो नहीं तो पैसा का पैसा देना और कहीं राज़ खुला तो जूती भी खानी पड़ेगी।

सब—हां! हां!! ज़रूर (सरदार को नशे की हालत में थाम थूम कर ले जाते हैं)

(यवनिका उद्घाटन)
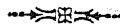
अष्टम गर्भांक।

[शाह अलाउद्दीन सामने शाही तखत पर वैठा हैं इर्द गिर्द दरबारी लोग बड़ी शान से कुर्सियों पर अकड़े बैठे हैं नृत्यकी गा रही है]

(ग़ज़ल)

फसाना दिल किसी गेसू में मरजाना हि होता है।
लगाना दिल किसी माशूक से, मुरझाना होता है॥
करे जो आरज़ू उनसे बहाने उनको आते हैं।
ये सुन कर गुफ्तगू उनकी फ़क़त जल जाना होता है॥

लगाया था समझ कर यह कि कट जांएगे दिन सारे।
मगर अब कहते कुछ उनसे फकत शरमाना होता है ॥
जो जाऊं पास उनके तो करते सैकड़ों नखरे।
पहुंच अब रुबरु उनके पलट आना हि होता है ॥
न देना दिल किसी बे रह्म को यह याद रखना बस।
न करना इश्क़ ऐ शैदा अबस मरजाना होता है ॥

(नृत्यबन्द चोपदार का प्रवेश)

चोपदार-(झुककर सलाम करके) शंहशाह सलामत की उम्रो-दौलत दराज़ हो। थम्भोर से लौट कर पंजहजारी मंसबदार आए हैं और हुजूर की दीदार के ख्वाहां हैं।

शाह—अच्छा यहाँ हाज़िर करो।

[चोपदार का प्रस्थान और पुनः मनसबदार के साथ प्रवेश]

[मन्सबदार झुककर सलाम करता है]

शाह—(मंसबदार से) कहो ! खतका मेरे क्या जवाब मिला ?
हाल क्या है ? कुछ कहोतो उस बुजदिले दिलगीर का।
जुबानी दिया जवाब या खत है कोई तहरीर का ॥

मनसबदार—शाह ! (हाथ जोड़ कर)
बुज़दिल न कहिये जांपनाह ! क्या ज्वाब था हम्मीर का।
सुनकर सीने के पार होगया कबज़ए शमशीर का ॥

शाह—तो क्या उसने कोई ऐसी बे अदबी के अलफाज़ कहे ?

मंसब—जहांपनाह ! बल्कि उसके अदना अदना मुलाजमान भी बेअदबी में साथ देते रहे।

शाह—कहो तो सही उसने क्या कहा ?

मन्सब—खुदावन्द न्यामत ! मंगोल के देने से तो साफ़ इन्कार किया और दुख्तर का नाम देखते ही दरे-दौलत को फिटकार दिया।

शाह--(तमककर) और तुम लोग सुन कर चुप रहे।

मन्सब—हुजूर! खता मुआफ़ हो, हम लोग करते ही क्या ?

शैर--"वह चाहता है अलीखां को सइसी के लिये।
साथही हर्म्म को मांगा है खवासी के लिये ॥"

शाह—(तैश में उठकर) ऐं ! तो क्या उस बददिमाग का दिमाग फल्क हफ्तुम पर चढ़ गया ?

मन्सब--गरीब परवर ! अब वह बहुत बढ़ गया।

शाह—तो कुछ परवाह नहीं, कुछ मुज़ाका नहीं, हम भी अलाने जंग करेंगे (फौजदार की ओर देख कर) फौजदार ! देखो ! कल्ह अल्स्सुबाह सारी फौज तैयार करके मैदान में लाकर क़वायद दिखावो क्योंकि कल्ह ही शाम को थम्भोर के लिये कूच करना होगा और चलकर हम्मीर का घर चूर करना होगा।

फौजदार—फब्वेहा ! इन्शाअल्लाह ऐसाही होगा।

शाह--(क्रोध से) देखें उस काफ़िर की हिमाक़त कहां तक है ?

[कहता हुआ एक ओर को चले जाते हैं और दूसरी ओर से दरबारी जाते हैं]

पटाक्षेप।
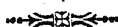
नवम गर्भांक ।

[दृश्य—दिल्ली का राजपथ, तीन मुसलमान—सैनिक परस्पर कुछ वार्तालाप कर रहे हैं]

पहिला—भाई खुदग़र्ज़ खां ! शाहंशाह का हुकुम सुनते ही मेरा पायजामा ढीला पड़ा गया ।

खुदर्गज़—[आश्चर्य में] अरे भाई नामर्द ! तुम्हारा तो सिर्फ़ पायजामा ही ढीला पड़ गया, और मैं अपनी क्या हालत बताऊं [सम्भलकर] भाई बात भी ठीक है, ये हिन्दुस्तानी राजपूत इतने बड़े लड़ाकू होते हैं कि कोई भी इनके सामने तलवार नहीं उठा सक्ता है इन काफ़िरों से तमाम दुनियां लोहा माने हुए है । [तीसरे की ओर देखकर] क्यों मिज्जू है न याद ! जो उस रोज़ हम्मीर ने डांटा था ? खुदा कसम मेरे पायजामें में तो वाकई पाखाना निकल पड़ा था । मैं तो उस रोज़ मारे शान के जब्त कर गया था । यह तो बात पड़ने पर कहना पड़ता है ।

मिज्जू—अरे यार ! मुझे अब उसकी याद न दिलावो मुझे तो नाम याद आते ही (हिचककर) मेरी रूह कब्ज हो जाती है । जब चलना होगा तब ही देखा जायगा ? (सम्भल कर) मगर दरअस्ल यार, इन बुतपरस्तों से खुदा ही बचावे ।

नामर्द—अच्छा तो चलो ज़रा बीवियों से तो मिललें खुदा जाने लड़ाई से लौटकर उन महज़बीनों का पुरनूर चेहरा नज़र आयेगा, या वहीं अपना खातमा हो जायगा ।

मिज्जू—हां जी ! अब तो देखो इस मरदूद शाहने हड्डों की छात फिज़ूल खोदी है। देखो क्या होता है।

खुदग़र्ज़—मुसीबत तो कसम खुदा की मुझे सब से ज्यादा है। क्योंकि अभी कुल ३ महीने हुए की नई बीबी शादी करके लाया हूं। अकेले कैसे छोड़ कर लड़ाई में जाऊंगा ? डरेगी न ! क्योंकि अभी बिल्कुल छोकरी सी है। हाय ! हाय !!

नामर्द—और मुझे तो कबाहट इस बात का है कि ३ बच्चे और विचारी अकेली बीबी। मेरे सिवाय उसके सर पर कोई नहीं। अगर मैं गया गुज़रा तो यहां विचारी कहीं की नहीं रहेगी। चुड़ियां फोड़कर मेरे नाम को रोयेगी।

मेज्जू—मेरी तवालत का ज़िकर सुनो तो रोने लगोगे। क्योंकि मैं अकेला और बीबी दो—यानी रोजमर्रा तो चार घंटे घमासान चौदस मचाही करता है और कहीं इस बीच में मैं पहुंच गया तो खूब मेरी मज़ामत दोनों मिलकर करना शुरू कर देती हैं। विचारे महल्ले वालों का खुदा भला करे कि किसी तरह छुड़ा देते हैं। न रहने पर न मालूम क्या होगा। मुफ्त में जरूर कोई फसाद वरपा होगा॥

[खु]दगर्ज़—और मुझे तो घर में पूरा शक है मर्द दो हैं या बीबी दो

[ना]मर्द—खैर ! मर्द दो हैं तो तू खुदाके घरमें अच्छी कमाई की है। एक मर जायगा तो दूसरा घर बनायगा। तूतो लड़ाई पर चल सकता है और मिज्जू मियां तुम भी अच्छे रहे, न

रहोगे वही अच्छा, रोज़ तुम्हारी मज़ामत तो न होगी ? यह भी कबाहत से छूटे। मुसीबत मेरे सिर है देखा जायगा, पर अभीसे क्यों मुहब्बत तोड़ना ज़रूर मिलना चाहिये चलो चलें

(सब जाते हैं)

दशम गर्भांक ।

(एक मैदान में सब यवन सैन्य पंक्तिबद्ध खड़ी है शाह अलाउद्दीन आते हैं)

फौजदार—अस्सलामालेकुम (सब सलाम करते हैं)

शाह—वालेकुम अस्सलाम !

शाह०—(उच्च स्वर से) मेरे प्यारे बहादुरों ! मैं, और ज्यादा तुम्हें कुछ न कहकर फ़क़त इतना ही कहता हूं कि बस ! अब चलो इस हम्मीर नाहंजार का घमण्ड चूर करें और हिन्दूओं के दरम्यान अपने सल्तनत के कौमी झन्डे की नींव पोख्ता जमावें इसके अलावा जो कुछ ज़रोमाल तुम्हें लूट में मिलेगा वह तुम लोगों को दे दिया जायगा । (शाह जाते हैं)

(क़वायद)

फौजदार०—नम्बर शुमार० (सब एक दो करके गिनते हैं)

इस्ताद (सब अकड़कर खड़े होजाते हैं

फेसरौ० (सब आगे बढते हैं)

रज अबबकुन० (एक कदम पीछे हटते है)

होशियार० (सब बन्दूक कन्धे पर धर कर खड़े होजाते हैं)

दवां० (सब दौड़ते हैं)

नेपथ्य में युद्ध वाद्य बजता है और सब ताल पर पैर उठाते और धरते हैं कोई तलवार निकाल कर दिखाता है और कोई बन्दूक दिखाता है सब गाते हैं गान समाप्त होते ही एक ओर चले जाते हैं।

(गान-आसावरी)

अब चलो जंग मैदान बीच सर लाखों का काटूं ॥टेक॥
ज़रमाल लूट घर लाऊं, उन सबको धता बताऊं।
तब आकर घर में बैठ खुशी से मज़ा खूब छाटूं ॥
शमशीर हमारी खासी, सालों से खूं की प्यासी।
पस ले ले सरकुफरान दोस्त में तुहफा यह ब़ाटूं ॥
यह सच्चा क़ौल हमारा, है कसम खुदा की यारा।
लै लै धड़ उन हिन्दुओं का दोज़खकी दरिया पाटूं॥
हम्मीर पकड़ कर लाऊं, थम्भोर जंग में पाऊं।
बस ले सूबे को जल्द उसे मैं दिल्ली से साटूं ॥

(यवनिका उद्धाटन)
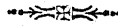
एकादश गर्भाङ्क।

थान शयनागृह निशीथ रात्रि महाराज हम्मीर देव, एक पलंग पर पड़े एक वृद्धमाता कृशतनु मैले व फटे वस्त्र लट छिटकाये इकतारा हाथ में लिये गा रही हैं ऐसा स्वप्न देख रहे तथा करवट बदल रहे हैं।

(विहाग)

लखत ना कोऊ मन की पीर।
निसि दिन बढ़त दाह उर भीतर, बेधत सकल शरीर ॥ल०॥

कल नहिं परत चैन नहिं आवत, जिय नहिं धारत धीर ।
जब सुधि होत पाछिली मोकूं, ढुरत नैनसों नीर ॥ ल०
भूखन मरत न भूषन तन पै, फाटी सिगरी चीर ।
हाय ! तबहुँ सुध लेत न कोऊ, काह कहूंरी वीर ॥ ल०
सुत सब सबल रहे अरु शिक्षित, सो सब ह्वैगै कीर ।
रटैं काग सों करैं कछू नहिं, बने लकीर फक़ीर ॥ ल०
आश चरण तौ धरहु "रुद्र" अब, क्षमहु मोर तकसीर ।
दीन दयालु दूरि करियो दुख, बिनओं हे रघुबीर ॥ ल०

आकाश वाणी (छप्पै)

सुनु ! अब हीं कछु दिवस दुख दूनो तैं पैहै ।
चाहैं करिहै कोटि यतन नहिं ऊनो ह्वैहै ॥
यवन राज के अन्त वितीते सुख इंहएहै ।
तुव सुत देश विदेश जाय, उत्तम बुधि लैहै ॥
बस ह्वैहै सुख अरु शान्ति सब, देवी यह मम बचन सुनु ।
जब शस्त्र शास्त्र गहिहैं सुवन, तब आपन उद्धार गुनु ॥१॥

वीच बीच मैं धर्म्म हेतु औतरि इंहएहैं ।
वीर महाराणा वंशज परताप कहवैहैं ॥
शिवा तुकाजी गुरु गोबिन्दसिंह नाम धरावों ।
बस केवल तुअ धैर्य्य हेतु यह गाथ सुनावों ॥

सो यह तासो निःचै करिय, करु उपाय मैं कहुं यही।
अब दुसःव्यथा यहि देश की तोसों नहिं जैहै सही ॥२॥

सोरठा।

मेरो बचन प्रमानु, तब लगि बन मैं रहहु प्रिय।
हरि दयालु जब जानु, आय तिलक कीजै सुतन ॥

देख! घबड़ाने की कोई आवश्यकता नहीं।

छप्पै।

एक अलाउद्दीन नाहिं बरु बहु बनि आवै।
अरु भारत की धरा दुष्टजनसों भरि जावै ॥
ग्राम ग्राम गो कटहिं शंख ध्वनि नाहिं सुनावै।
वेद मंत्र कोऊ पढ़ै नाहिं, पौराण दुरावै ॥
पै तबहुं कि हिन्दू धर्म्म यह, नाश न ह्वैहै बन्धुवर।
है रक्षनहार दयालु तोहि, स्वयं कृष्ण ही चक्रधर ॥

[बाणीं बन्द हो जाती हैं हम्मीर अकचकाकर उठ बैठते हैं।]

हम्मीर—हा दैव! तेरी विचित्र लीला है। अहा! माता का कैसा भयानक स्वरूप, फटे वस्त्र, निर्बल तन और वह दीनता के भरे शब्द, घोर आर्द्रनाद सुनकर मेरे तो रोमांच होगए। हाय! क्या कोई भी पुरुषाभिमानी अपने माता की ऐसी दशा देख सकता है? कदापि नहीं! यह गद्दी जो मेरे बड़ों से पूजित और रक्षित थी जिसके लिये अपने प्राण तक समर्पण कर दिये थे। क्या

आज तेरे ही हाथ से कलंकित होना है। हम्मीर ! तुझे धिक्कार है। जो तू अपने माता की ऐसी दशा देखकर भी जीता रहे। [सोंचकर] कोई सांत्वना भी तो दे रहे थे। परन्तु इससे क्या होता है ? क्या यह सोंचकर कि एक दिन मरना है तो आज आये हुये रोग की औषधी नहीं करना चाहिये ? कदापि नहीं ! अपने कर्त्तव्य पथ का आश्रय अवश्य लेना चाहिये। (तलवार चुमकर)

छप्पै।

जौ न यवन दल काटि, चूर करि धूर मिलावों।
करि स्वतंत्र निज भूमि, ध्वजा आरज फहरावों ॥
दिल्ली लौं दलि मलौं, दुष्ट को मारि भगावों।
देश उऋण ह्वै तबै, आज भूभार हटावों ॥
है यह पन बस चित्त मै, मातु विपति निरवारिहों।
बस खड्ग पानिलै तबहि मै, मुकुट सीसपै धारिहों।

(देवी का पुनः प्रगट होकर) साधु ! साधु !!

[हम्मीर का हाथ जोड़कर शीश झुका देना, पश्चात ड्राप का गिरना।]

द्वितीय अङ्क समाप्त।

तृतीय अंक ।

प्रथम गर्भाङ्क ।

(यवनिका उद्घाटन)

(महाराज हम्मीर देव जी दोनों हाथ जोड़े देवीजी की आराधना देश के निमित बड़े करुणा शब्दों में कर रहे हैं पूजा सामग्री सब उपस्थित है)

प्रार्थना ।

जयतु जयतु जयतु मात, दुष्ट असुर कर निपात ।
सुमिरत दोउ जोरि हाथ, धन्य मातु काली ॥१॥
शूल खड्ग हस्त पाश, सकल जगत तुव प्रकाश ।
शत्रु सैन्य कर बिनाश, शोक हरण वाली ॥२॥
भारत तुव रह्यो पुकार, विनवत तोहिं बार बार ।
डूबत यही भव मझार, शरण रक्ष-पाली ॥३॥

महाराज०-[कवित्त]

लखि गति तेरी नैन ढुरत अपार नीर,
धारु उर धीर पीर सकल छुड़ावैंगे ।
कवि अमरेश तन मन धन वारि तोपै,
जा विधि बनैगो सोई रूप दरशावैंगे ॥
करिकै रिहाई रजनीचरन पंजन तैं,
जसकी बधाई अम्ब अवनि बजावैंगे ।

नाचन नचाय दैत्य दानव दुराय दल,
माता तेरी त्राण हेतु शीशहू कटावैंगे ॥

महाराज—कोई है ?

(प्रहरी का प्रवेश ।)

प्रहरी—महाराज की जो आज्ञा ।

महाराज—सुखवीरसिंह ! क्या आज पहरे पर रात से तुम्हीं हो ।

सुखवीरसिंह—राजन ! आज आपकी सेवा में दास को सौभाग्य प्राप्त हुआ था ।

महाराज—क्या तुम ने कुछ सुना था ।

सुखवीर—हां ! महाराज किसी के कलकंठ से कुछ विरह सनित गाने के शब्द सुन पड़े थे फिर उसके बन्द होते ही किसी ने गगन भेदी शब्दों में कुछ छन्द कहा था, किन्तु मेरे ध्यान में कुछ न आया ।

महाराज—अच्छा तो तुम अभी जावो और समस्त सामन्तों को मेरे पास शीघ्र भेजो । (महाराज टहलते २ कुछ सोच रहे हैं)

सुखवीर—जो आज्ञा महाराज !

(कहकर ज्योंहि द्वार पर पहुंचते हैं, सुजान सिंह आ जाते हैं)

सुखवीर—[सुजान से] क्यों भाई सुजान ! कुशल तो है ? आज इतने सवेरे तुम्हारा आना चित्त को बड़ा चिन्तित कर रहा है ।

सुजानसिंह—भाई ! कुछ न पूछो, यह तो कहो महाराज आज कैसे यहां टहल रहे हैं ?

महाराज—सुजान ! तुम इतने भोर में कैसे ? कहो थम्भोर में तो कुशल है ?

सुजान-[झुककर प्रणाम करके] महाराज ! थम्भोर दुर्ग चहूंघा से यवन सैन्य ने घेर लिया है। प्रत्युत ! कहीं से निकलने तक की सांस नहीं है। सैन्य घबड़ा रही है।

महाराज-तो इसमें घबड़ाने की क्या आवश्यकता है ? (वीरभाव से) वे पामर हमारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते [साधारण] तुम जाकर दुर्ग के उत्तर पश्चिम का सुरंगद्वार सावधानी से खोल रखो, हम एक पहर में वहां पहुंच जायंगे और देखो इस तरह घबड़ाने से काम नहीं चल सकता, जावो अपने सैनिकों को सचेत व शस्त्र सुसज्जित कर रखो हम अभी आते हैं सब युद्ध के लिये सावधान हो जावो।

(एक ओर से सुजान का प्रस्थान दूसरी ओर से एक सैनिक का प्रवेश)

सैनिक—महाराज ! अब दुर्गरक्षण होना असंभव है यवन सैन्य एक दम गढ़ पर चढ़ी चली आ रही है और कुछ मनुष्य तो दुर्ग द्वारलो पहुंच कर उसे तोड़ने का प्रयत्न कर रहे हैं

महाराज--अच्छा तो तुम अभी जावो और जिस प्रकार बने द्वार की रक्षा करो मैं अभी आ पहुंचा, देखो कोई भी राजपूत घबड़ाने न पावैं,

[सैनिक का प्रस्थान, और महाराज भी एक ओर को चले जाते है]

[पटाक्षेप]

द्वितीय गर्भाङ्क।

(बिजुली जान अपने यार की फिराक़ में गाती हुई आती हैं)

छैल संइयाँ सुरतिया पै वारी जाऊं ॥
सुरतिया मुरतिया संवरिया सेजरिया पै वारी जाऊं।
शैर—करके करार आये नहीं वक्त टल गया।
मैं थाम जिगर रह गई पै दिल निकल गया ॥
कब तक से तेरी याद में बेकल रहूंगी मैं।
कल्क़ है दिल में कि जो तू कल निकल गया ॥
ताकों तोरी अटरिया डगरिया नजरिया पै वारी जाऊं ॥

बिजुली—मेरा प्यारा, हिम्मत खां अब तक नहीं आया क्या दिल लगाना भी बुरा होता है ? (हिम्मत का प्रवेश)

हिम्मत—बीबी साहब ! भले का भला और बुरे का बुरा होता है।

बीबी—भला यह कौन कहता है ?

हिम्मत—तमाम दुनियां !

बीबी—अच्छा तो मेहरबानी कीजिये करम फरमाइये, कदम बढ़ाइये मैं ऐसे दिल लगाने से बाज आई।

हिम्मत—बीबी ! तुम क्या बाज आवोगी। मैं खुद बाज आता हूं।

बीबी—यानी ?

हिम्मत—तुम्हें तिलाक़ देने आया हूं।

बीबी—वह क्यों !

हिम्मत—यों कि मंगोल ने बेग़म से दिल लगाया तो उसका नतीजा यह पाया कि आप तो आप गया और हम सरीखे लाखों ग़रीब के गले पर छूरी फिरवाया जब मुझे यह किस्सा मालूम हुआ तुम्हें खबर देने दौड़ा आया [बाहर से आवाज] किवाड़ खोलो।

बीबी—(आवाज से) आप कौन हो कुछ मुंह से तो बोलो (हिम्मत से) क्यों अब खोल दूं मंगोल की तरह से तेरी भी हजामत करा दूं।

बाहर से—अरे! खुदगर्ज़। मैं! मैं!

हिम्मत—देख तेरी भी नाक कटेगी और मुझे भी जूता खाना पड़ेगा।

बीबी—नाक कटे मेरी बला। मैं बातें बनालूंगी।

हिम्मत—खैर! तो देखा जायगा [बीबी किवाड़ खोलने जाती हैं हिम्मत किवाड़ की ओट छिप जाता है।] (खुदगर्ज का प्रवेश)

खुदगर्ज़—किवाड़ खोलने में इतनी देर क्यों हुई।

बीबी—मैं आपके लिये खुदा से दुआ मांग रही थी।

खुदगर्ज़—[अलग हटकर] देखा इसकी पारशाई खुदा करे ऐसी नेकबख्त पारशा बीबी सबको नशीब हो [प्रगट] दुआ मांग रही थी या किसी से भसर भसर बातें कर रही थी?

बीबी—देखो मियां यह दिल्लगी अच्छी नहीं मैं आपके सरकी कसम खाकर कहती हूं कि मैं सिर्फ हिम्मत के साथ अकेले में बैठी तुम्हारी याद कर रही थी।

खुदगर्ज़—[अलग होकर] हाय ! हाय ! हिम्मत के साथ ? यह दिल पर नहीं मुद्दा है यह कोई अलाकुड्डू कूदा है। मैं तो पहिलेही से जानता था पर क्या करूं मुझे भी अपना मौक़ा देखना है। (प्रगट) खैर ! देखो अगर मुझे कोई तलाश करने आवे तो कह देना कि लड़ाई पर गये हैं घर पर मत बता देना।

बीबी—मुझे क्या? ऐसाही कह दूंगी पर क्यों मियां आप इस वक्त बे मौके कैसे टपक पड़े। आप तो लड़ाई पर गये थे न ?

खुदगर्ज़—गया तो था। लेकिन वहां जान जोखम का मामला देखकर निकल भागा।

बीबी—मियां तुम कैसे सिपाही हो? मर्द हो या जनाने ?

खुदगर्ज़—जनाने की बच्ची ! राजपूतों के मुक़ाबिले में लड़ना सरासर जान बूझकर अपनी जान गवाना है। मुझे क्या अपनी जान प्यारी नहीं ? ये कौम ऐसी बे रहम होती हैं कि अपनी जान को तो जान समझती नहीं और बेवकूफ दूसरे का सिर भूट्टा सरीखे खट से उड़ा देती है यह भी नहीं सोंचते कि इसके बीबी बच्चे क्या करेंगे।

बीबी—मियां तुम तो पूरे मर्द निकले। मैं अगर ऐसा जानती तो कभी भी तुम्हारे साथ शादी न करती, राजपूतों ही के घर चली जाती।

खुदगर्ज़—यही तो बड़ा मज़ा है बीबी ! खुदा उनका भला करे ! ये दिमाग़ उनमें कहां कि मेरे घर का माल पचा

सकें। बीबी अगर ऐसा होता तो कभी यह कौम हिंदुस्तान में साबित न रह जाती।

बीबी—अच्छा तो मियां! तुम चोली साड़ी पहनकर बैठो या लड़ाई पर वापिस जावो नहीं तो मैं मुहल्ले वालों से कह आती हूं—[जाना चाहती हैं खुदगर्ज रोकता है]

खुदग़र्ज़—ठहर ठहर! अरे नेकबख्त! बल्कि चोली साड़ी पहिनना मंजूर होगा लेकिन मुझे सिर कटाना मंजूर नहीं है।

[बीबी साड़ीं लाने भीतर जाती हैं]।

हिम्मत—(छिपा छिपा] यह तो मर्दानगी में मुझ से भी गया बीता है अब अकड़ कर निकल चलें मौका भी अच्छा है

[बीबी साड़ी लाकर उसके ऊपर फेंक देती हैं हिम्मत बाहर जाने चाहता हैं कि उसे खुदगर्ज देखकर बीबी से)

खुदग़र्ज़—बीबी यह कौन है मरदूद [हिम्मत से] अबे खड़ा रह दिन दहाड़े चोरी करने चला शरीफों का कपड़ा पहनकर लोगों को धोखा देता है।

बीबी—मियां यह तो आपही के पीछे २ मुआ आया था मैंने समझा कि साथ में आप कोई नौकर ले आये हैं।

हिम्मत—नौकर कभी इसके बापने भी रखा था। (खुदगर्ज से] मैं खुफिया पुलिस हूं पुलिस! जब तू पलटन से भागा है उसीके चंदमिन्टों पर मैं तेरे ताक में निकला—पर अब मुझे पूरा पूरा पता लग गया कि तूही है। अब मैं पलटन के अफसर के पास रिपोर्ट करने जाता हूं।

खुदगर्ज़—बाबा ! खुदा के वास्ते माफ करो। मेरी तरफ से दिल साफ करो जो कुछ कहा उसके एवज में मैं अपना कान पकड़ता हूं।

हिम्मत—[अलग जाकर] अच्छा बेवकूफ मिला तब इससे कुछ वसूल भी करना चाहिये—[खुदगर्ज] ऐसे हम नहीं छोड़ सकते।

खुदगर्ज़—अच्छा तो यह मेरे पास जो कुछ रुपये हैं उसे मंजूर करिये। मुझे गरीब समझकर छोड़ दीजिये। [रुपया देता है बीबी रोकती है पर वह देही देता है]।

बीबी—मियां यह क्या कर रहे हो इसे अच्छी तरह पहचानतोलो

हिम्मत-खैर ! देख लड़ाई तक के लिये घर छोड़कर कहीं दूसरी जगह भाग, वरना घर जायगा तो सिर उड़ा दिया जायगा [अलग जाकर] मरदूद घर में रहेगा तो मेरा काम कैसे चलेगा (हिम्मत जाता है]

खुदगर्ज़—अच्छा भाई साहब ऐसाही करूंगा। लेकिन आप अपनी जानिब से......[बीबी से] बीबी तुम समझती नहीं हो हम रहेंगे तो बहुत रुपया आवेगा।

बीबी-क्यों मियां यह कौन मोहकमा है इसके पास न तो चपरास है न कोई सिनाख्त है ?

खुदगर्ज़—बीबी यह खुफिया कहलाते हैं, सकल बदल कर पता लगाते हैं।

बीबी—यह क्या ज्यादा पढ़े लिखे होते हैं ?

खुदगर्ज़—पढ़े लिखे तो साढ़े बाइस होते हैं। लेकिन चालांकी में कौवा समझो, हमी लोगों से पूछ पांछ कर अट्ट की सट्ट लगाकर कमा खाते हैं हमारे ही जैसे शरीफ यानी जिसके पास दो पैसा देखा कि उसके गले पड़ गये। अब इन्हें कुछ देना ही जरूरी होता है। क्योंकि हमारे शाहंशाह सलामत इन्हीं लोगों पर सलतन्त का दारोमदार रखते हैं। अपने को क्या करना जैसा देश वैसा भेष। चलो यह सब झंझट छोड़ो फिर कभी पूरा पूरा बता देंगे। नहीं तो कहीं कोई उसका भाई आ जायगा तो वह भी नोट करके झमेला मचायेगा।

बीबी—अच्छा तो मियां इसके कहने में कहीं बाहर न जाना। नहीं तो तुम्हारे बिना मैं कैसे रहूंगी।

खुदगर्ज़—हाय ! हाय !! मुझे खुद चैन नहीं पड़ता पर मैं क्या करूं बीबी !

गाना—मियां बीबी।

बीबी—पिया तोरी सुरतिया को प्यार करूं रे।
मियां—तेरी भोली २ बातें, और आंखों की घातें।
भला कैसे के तुझ को बेजार करूं रे॥
बीबी—पिया तोरी सुरतिया को प्यार करूं रे।
(मुड़कर) मुवे तेरी सुरत पर फिटकार करूं रे।
पुनः—ऐ मेरी जानां, कहीं बाहर न जाना।

तुम पर जानों जिगर मैं निसार करूं रे।
मियां—भला कैसे मैं तुझको बेजार करूं रे।

[हाथ मिलाये दोनों चले जाते हैं]

पटाक्षेप।

चतुर्थ गर्भांक।

[देवलकुमारी अपने सहेलियों के साथ वाटिका में चिंताग्रस्त बैठी है]

एक सहेली-कुमारी जी! क्यों इतनी विह्वल हैं भला ये पामर कभी राजपूत सैन्य से जीत सक्ते हैं, यह कभी संम्भव नहीं। हां! महाराज के आने भर की देर हैं सुनो सखी—

मोहिनी-मन मों, धीर धरो एरी बीर।
कुल गुरु भगवान सुमिर मन,
पीर हरें रघुबीर ॥१॥ मन मों धीर० ॥

कुमारी-मम कारन अति कष्ट पिता को,
त्यागौं अधम शरीर ॥२॥ मन मों० ॥

माधवी-क्षत्रि जात अस जिय नहीं राखत।
कस तुव होत अधीर ॥३॥ मन मों० ॥

राजकुमारी—प्यारी मोहनी, देखो यवनों ने दुर्ग घेर लिया है अब उनके आने में क्या देर है पिता जी कहां तक हमारी रक्षा कर सकते हैं, भला तुम्ही सोंचो, महाराज कैसे इस रावण दलवत यवन सैन्य से विजय पावेंगे? देखो बहेन।

मुझे और कुछ नहीं ! शोच केवल इस बात की है कि भइय्या अभी निरे छोटे हैं ।

[कहते कहते कन्ठावरोध हो आता है और आंसू गिरते हैं]

मोहनी--(आंचल से आंसू पोंछ कर) सखी ! देखो तो इतनी चिन्ता क्यों करती हो महाराज इस्में अवश्य जै लाभ करेंगे यह मेरा कथन मिथ्या न मानो, और यह बात तो सहसा तुम्हारे ही मुंह से सिद्ध हो गई । भला तुम्हीं कहो, रावण दल भी कभी राम दल से जीता है [दूसरी की ओर देख कर] क्यों बहेन माधवी ?

माधवी--हां ! बहेन तुम्हारा कहना बहुत ठीक है ।

कुमारी--हाँ ठीक क्यों नहीं है । भइ तुम लोग तो इतनी मुंह मिट्ठू हो कि बस मैंने तो केवल उपमार्थ कहा था और तुम लोग उसे हाथों हाथ उठा लिया (तीसरी की ओर देख कर) जैयन्ती ! तू क्यों मौन है तू भी कुछ कह ।

जयन्ती--कुमारी जी ! बहेन मोहनी और माधवी का कथन ठीक है वास्तव में सखी--

दोहा ।

शाह अलाउद्दीन को, लंकपती सों जान ।
महाराज हम्मीर कंह, राम सकल विधि मान ॥

कुन्डलिया ।

तासों अब ह्वैहैं विजय, या संगर के बीच ।
ल्याई हैं इंह शाह को बांधि दुहूं कर मीच ॥

(महाराज का केशरिया वस्त्र धारण किये प्रवेश सब झुककर प्रणाम करतीं हैं)

महा० —बांधि दुहूं कर मीच शाह को इंहलयाई ।
जो मोसूं पामर निःचरने ठनी लराई ॥
बस अब निःचै वाहि दंड देइहौं अस जासों ।
पावै रौरौ नर्क छुटै नहिं कबहूं तासों ॥

(जयन्ती के शिर पर हाथ रखकर)

पुत्री ! तू सौभाग्यवति हो, यह तेरा कथन अवश्य ठीक होगा (कन्या से) कुमारी देवल ! (वात्सल्य भाव से शिर पर हाथ फेर) देखो ! तुम इतनी चिन्तित क्यों हो ? भला क्षत्राणियों के लिये यह उचित है ? तुम वीर कन्या हो, तुम्हारे लिये यह कभी शोभा नहीं देती। भला क्या तुम्हें यह विश्वास है कि यह भारत वसुंधरा एक दम म्लेक्षाक्रन्न हो जायगी ? ऐसा संभव नहीं, मैं अभी अलाउद्दीन का मान मर्दन करता हूं।

कुमारी--पिता जी ! आपका कथन तो सब ठीक है किन्तु । मुझे चिन्ता इस बात की है कि यदि कहीं दैवात..........

महाराज—(बात काट कर) देवल ! तुम्हारे मुख से कोई कुटिल वाक्य न निकलना चाहिये यदि ऐसा ही हुआ तो उसके लिये कुछ चिन्ता नहीं तुम लोग भी वीर गति को पाना।

कुमारी—पिता इस महासंग्राम की प्रधान कारण मैं ही हूं, सो क्यों न मुझे ही आदेश हो कि अपने ही हाथों से उस दुष्ट अलाउद्दीन का मस्तक काट कर आपके आगे ला रक्खूं और

यदि खेत रही तो भारत के इतिहास में अमर गाथा रह जायगी ।

महाराज–बेटी ! मेरे रहते तुम रण में जावो, क्या यह उचित होगा ?

कुमारी–(रोते हुए) तात !

(बरवा)

या रन की मैं कारन हौं पितु राज ।
सो मोहिं आयसु दीजै, तजि सब काज ॥
हौंहूं चलि तुव संघै, सजि रन साज ।
पठवों अलाउद्दीनै, जमपुर आज ॥

महाराज–देवल ! कभी नहीं, तुम धैर्य्य धारन करो । मैं स्वयं उसके कृत्यों का यथेष्ट फल दूंगा देखो [आवेशसे]

छप्पै ।

मू. ग्र.–करौं घोर घमसान वेरि दलबल दहपट्टौं ।
सुन्डन रहित वितुन्ड मुंड समसेरनि कट्टौं,
उठै रुन्ड रन रुधिर कुन्ड भरि भूत उमत्थै,
बंधौ युत्थ पर युत्थ लुत्थ पर लुत्थ उलत्थै,
आलाउद्दीन न मारौं पकरि, देहु पठै जमलोक को ।
बेटी टुकतै धैर्य्य धरु, यह समयो नहिं शोक को ॥

लो अब मैं जाता हूं तुम निश्चित रहना [एक ओर को जाते हैं]

यवनिका उद्घाटन ।

पञ्चम गर्भांक ।

[एक उपवन में एक पाषाणी चौकी पर एक वृद्धा स्वेत वस्त्रधारिणी बैठी पूजा कर रही है महाराज का प्रवेश]

महाराज--[वृद्धा से झुककर] दुधुआ के चरणों में दास का प्रणाम स्वीकार हो ।

वृद्धा--[सिर उठा कर] चिरंजीवी हो, भइय्या! क्या अब एक दम तैयार ही हो कर आए हो ?

महाराज—हां माता ! अलाउद्दीन दुर्ग द्वार तक आ पहुंचा है । अब चिरंजीविता कहां, अब तो इसी रणाग्नि में आहुती होना है ।

माता—[वात्सल्य भाव से शरीर पर हाथ फेर कर] बेटा कुछ चिन्ता नहीं देखो—

सवैय्या ।

बीर पै तीर छुरी पै छुरी सहि, म्लेक्षनको चढ़ि धाय दबायहु ।
खग्ग पै खग्ग परै जऊतो निज वक्षकोंसौंह सपूत दिखायहु ।
है तोहिं 'रुद्र' की आन लला, नहिं दूध पिये को कलंक लगायहु ।
काहु लरै रन भूमि में पूत पै पीठ दिखाय, घरे जनि आयहु ॥

छप्पै । सुनो पुत्र-

जुझौ जौ तुम पूत फारि रवि मन्डल जैहौ ।
स्वर्ग लोक मैं पूर्व पुरुष संग आनंद पैहौ ॥

जौ विजई बनि आय, पुनः निज जननि जुडैहौ ॥
मोदक तुअ दोऊ पानि, राजथम्भोर बढ़ैहौ ॥

उल्लाला ।

यह मम असीस धरि सीस सुत, संभरि जाय संगर लरहु ।
धरि ध्यान "रुद्र" हिय माझ अब, रिपुन मान मर्दन करहु ॥

महाराज—अवश्य माता जी !

मू० अ० छप्पै ।

करौं युद्ध करि क्रुद्ध आज अब रुद्ध सुद्ध मन ॥
अरि विहन्डि करि खन्ड खन्ड डारौं गनी मगन ॥
परै सो रचहु ओर घोर दिन रैनन सुज्झै ॥
गज तुरंग चतुरंग अंग भरि भूत अरुज्झै ॥
बिन मुन्ड सुन्ड धावै धरनि, बचन बोलि चूकौ नहीं ॥
फेरौं न वाग रन भूमिते, मानु मातु मेरी कही ॥

माता—साधुवाद ! पुत्र तुम धन्य हो, अच्छा जावो अब देर न करो ।

[महाराज साष्टांग दंडवत करते हैं माता उन्हें उठा कर आशिर्वाद देती है और पुनः शिर पर हाथ फेर कर विदा देती है महाराज एक ओर को जाते हैं]

पटाक्षेप ।
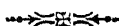
षष्ठम गर्भांक ।

महाराज का दरवार लगा हुआ है सब केशरिया वस्त्र धारे राजपूत पंक्ति-बद्ध कुरसियों पर बैठे हैं सामने नृत्यकी खड़ी है गान हो रहा है

[गान कव्वाली]

महाराज को विजय हो हम सब सुहाग गाएँ ।
सुन्दर अलाप करके सुहिला सभी सुनाएँ ॥
हिय में यही बसा है मुखसों निकल रहा है ।
दुष्टों विधर्म्मियों की क्षय हो, इनाम पाएँ ॥
अलाउद्दीन भागा रन से मुआ अभागा ।
चहुँवा से धनिये आवैं, जावैं सभी बलाएँ ॥

(एक तीर आकर ठीक नृत्यकी के वक्षस्थल में लगता है नृत्य की गिरती है)

महाराज—(मंत्री से) मंत्रीवर ! देखा यह दांव पेंच ? खैर ! कुछ चिन्ता नहीं, (नृत्य की ओर इंगित करके) इसको उठवा कर शीघ्र वैद्यराज जी के यहां भेज दो और जाजाबड़गुज्जर को बुलवाओ ।

[मंत्री वन्दी को सैन करते हैं, वन्दी जाता है एक डोली सङ्ग में लेआता है, कहार उसे उसपर चढ़ा कर एक ओर को लेकर चले जाते हैं (दूसरा वन्दी आकर)]

बन्दी—(झुक कर प्रणाम करता है) महाराज की जय हो पं० जाजाबड़ गुज्जर द्वार पर उपस्थित हैं । महाराज के दर्शन के इच्छुक हैं ।

महाराज—अच्छा तो उन्हें यहां बुला लाओ।

(वन्दी जाता है और पुनः जाजा के साथ प्रवेश)

जाजा—महाराज के चरणों में दास का प्रणाम स्वीकार हो।

महाराज—आइये! कहिये सब कुशल तो है न?

जाजा—सब इन्हीं चरणों की कृपा से। किन्तु कहिये मेरे लिये क्या आज्ञा है?

महाराज—जाजा! अलाउद्दीन की दुष्टता तो तुम्हें विदित ही हो चुकी होगी?

जाजा—महाराज! भली भाँति, किंतु उसके इस दुष्ट कृत्यों का दण्ड देना हम लोगों को उचित ही है।

महाराज—परन्तु! तुम्हारे लिये मेरी यह सम्मति है कि तुम क्यों इस रणाग्नि में पड़ो, तुम मेरे अतिथि हो, अस्तु ऐसे कुअवसर पर तुम्हारा यहां रहना ठीक नहीं, सुतरां! कुछ दिनों के लिये सम्प्रति तुम घर चले जावो। यदि जीवित रहा तो पुनः तुम्हारे घर से तुम्हें बुलवालूंगा, देखो! हमारा हठ हमें विवश कर रहा है कि हम इस रन में लड़ मरें। सुनो! दोहा—

रवि खसि वरु धरनी धरै, रसा रसातल जाय।
पै हमीर हठ ना टरै, सुनु बड़ गुज्जर राय॥

(बरवा)

यदपि हुताश न रुद्रहु, कोपैं व्याल।
सूर्य्य सकल रश्मिनसों, उइ यहिकाल॥

काल करालहु हंकरै, चढ़ै सुरेश ।
बरसै घन घन घोरै, करि आवेश ॥
मीर तदपि नहि देहौं कहइ करि सौंह ।
मरिहौं इन दुष्टन कहइ तानत भौंह ॥
मुष्टिक एक विधर्मी, इन को कौन ।
निमिख मारतै भेजिहौं, जमपुर भौन ॥

जाजा—महाराज! किन्तु! ऐसे सुअवसर पर स्वामी के मुख से जाने का शब्द सुन कर बड़ी चिन्ता हुई, नृपवर! आप स्वयं ध्यान दें, जिस्की कृपा से सपरिवार आज लों सुखमय जीवन बिताया; उस्के असमय में चला जाना उचित है? कभी नहीं? महाराज!

(मू. ग्रन्थ)

दोहा—जे जन जाये जार के, ते निज निज गृह जायं ।
स्वामी संकट में तजै, को एतो सुख पाय ॥
स्वामी के संकट परे, ते तजि भाजहि क्रूर ।
लोक अजस भाजन बनहिं, जमपुर जात जरूर ॥

सो०—सुनु हमीर नर नाथ, मैं बड़ गुज्जर जाति को ।
अब ह्वैहौं, दै माथ, उरिन तिहारी लोन तैं ॥

महाराज—साधुवाद !!! (सब दरबारी से) मेरे प्यारे शूर वीरों! देखो इन दुष्टों का क्षय करना ही क्षत्रियों का परमधर्म्म हैं, मनुष्य को अपनी स्वाधीनता के लिये अवश्य कोई साधन

उठा न रखना चाहिये; वीरों, देखो! बिना खड्गबल मनुष्य सदा पराधीन रहता है। (खड्ग उठाकर) !

दोहा—याही बिनु स्वाधीन नर, पर अधीन ह्वै जात।
पर अधीनहु याहि बल, सुख, स्वराज लहि जात॥

सो इसी के हेतु हम लोगों का परम कर्तव्य है कि चल कर आज रंगभूमि में इन दुष्टों को रंग दिखाएँ और रक्त की धार बहावें, नेक ध्यान तो दो—

रोला—यहि असार संसार माहिं सब स्वप्न अहै प्रिय।
रहै एक बस कीर्ति अटल जिन्ह ने जैसो किय॥
यामे कोऊ अजर अमर ह्वै आवत नाहिं॥
सुजश अजश रहि जाय, करो सब कीर्ति सदाहिं॥
लैलै खांडा दुहु पानि बिछुआ कम्मर कसि।
बांधो अब सब वीर, बेगि नहिं लावो आलसि॥
जौ रन बीचै विजय लेहु नभ ध्वजा उड़ावहु।
जुज्झौ जौ इतिहास माँझ निज नाम लिखावहु॥

छप्पै—उठहु वीर धरि धीर कमर कसि रन पगु धारहु।
वेगि चलहु निज जन्म भूमि कर दुःख निवारहु॥
लखहु आज यह देव धरा है म्लेक्षन सों मय।
तासों यहि को करि उबार करु दुष्टन की क्षय॥

बस यहि आलाउद्दीन को, आष्टुमान मर्दन करहु ।
अरु निर्भय ह्वै नैराश तजि, यवन बीच संगर लरहु ॥

[सब सिपाही अपनी २ तलवारें खैंच लेते हैं और लपलपाते हुए आवेश से]

सब सिपाही—(एक स्वर से) महाराज! हम लोग सब परिकर हैं ।

बरवा—चलहु आज इन दुष्टन, देइहौं मीच ।
रक्त धार बहि जैहैं, रन के बीच ॥
सोनित सों नहवैहौं, खग्ग दुधार ।
मुन्ड माल पहिरैहौं, शिव की नार[1] ॥

महाराज—अच्छा तो अब चलो, देर नहीं करना चाहिये ।

[सब एक साथ ताल पर पैर उठाते धरते हैं और कोई तलवार दिखाता है कोई बन्दूक तानता हैं और बीर गान करते हैं]

(गान)

चलो आवो रन आंगन में धूम मचाएँ ।
मेरे प्यारे सरदार, करो भारत उपकार ॥
लावो पल भर न वार, दुष्ट राकस को मार भगाएँ ।
चलो आवो रन आँगन० ॥

हैं हम रिषि की सन्तान, राम लछमन की सान ।
जग में मेरा है मान, यह गाथा सभी हम गाएं ॥
चलो आवो रन आँगन० ॥

---

१ गर्दन ।

करैं जीवन कुर्बान, धरैं जननी का ध्यान।
लरैं जी भर घमसान, वीर गति को तभी हम पाएं ॥
चलो आवो रन आँगन० ॥

'रुद्र' हिय में जपैं, नीति जग में थपैं।
नहीं डर से कपैं, जै पताका सभी हम उडाएं ॥
चलो आवो रन आँगन० ॥

[नैपथ्य में लड़ाई आरम्भ होती है। अल्लाहोअकबर का शब्द सुन कर हिन्दु सैनिक हरहर महादेव कहकर दौड़ते हैं]

(यवनिका उद्घाटन)
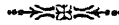
सप्तम गर्भाङ्क।

(तलवार की झनकार और धर २ मार २ का शब्द होता है यवन सेना का भागते दिखाई देना सिपहसालार का आकर सैन्य को धिक्कारना)

मिज्जू—तुम्हारे लोगों के साथ हमारी भी बदनामी होगी एक दम भागा भाग अपने अफ़सर की कुछ भी नहीं सुनना—

नामर्दा—अफ़सर का पैर तो हम लोगों के पहिले ही उखड़ चुका था।

सब—हम लोगों का कुसूर बिल्कुल नहीं है जब अफ़सर नहीं तो फौज़ क्या करेगी वह ख़ाक दम भरेगी?

मिज्जू—मुंह पर कहना तब मालूम पड़ जायगा।

नामर्दा—अरे यार! तू तो ऐसी बातें कर रहा है जैसे हम लोगों के भागने बाद तक तूही मैदाने जंग में लड़ता रहा।

सब—यहां आकर ज़वांमर्दी छांट रहे हो ? ज़वांमर्द होते तो यह नौबत काहे को आती । (सरदार का आना)

सरदार—लानत है तुम लोगों के ज़वांमर्दी पर । देखा राजपूतों की दिलेरी आगे के सिपाहियों का सिर कटा चला जा रहा है और पीछे वाले जोश में आगे चले आ रहे हैं ।

मिज्जू—मियाँ साहब सरपरस्त अगर दिलेर रहा तो सिपाह बिचारे कभी नहीं हट सकते—इसमें हम आप किसी का भी कुसूर नहीं है ।

सरदार—इस वक्त तो इनका कहना ठीक है कि हमारे शाहंशाह सलामत ही पहिले दबे । वरना ऐसी नौबत काहे को आती

[शाहंशोह का गुस्से में आना]

शाहंशाह—सरदार ! चले जावो सामने से, मुंह काला करो ।

[सब एक एक करके खसकते हैं]

सरदार—जहांपनाह इसमें मेरा क्या कुसूर है ।

शाहंशाह—सब तेरा ही फितूर है । क्या देखा नहीं हम्मीर की बहादुरी?

सरदार—जहांपनाह ! बस हाथ चूम लेने का काम किया था ।

शाहंशाद—वाक़ई बहादुरी इसी का नाम है । वाह रे राजपूत यह तेरे ही खानदान के हिस्से में हैं । लेकिन तुम लोग ऐसे डरपोक हो कि निशान तक छोड़ भागे ? लानत है ऐसी बहादुरी पर । खैर ! अभी फौरन ही दिल्ली की ओर

कूंच करो और वहां चल कर फिर कोई तदबीर सोची जायगी।

[बादशाह एक ओर को जाता है सरदार दूसरी ओर जाता है]

(यवनिका उद्घाटन)

अष्टम गर्भांक।

[एक कमरे में, बीचोबीच अग्नि जल रही है सामने देवलकुमारी, इधर उधर टहल रही हैं, और कुछ गाती जाती हैं]

(गान–राग बहार)

अब तो तन मन सब हारियां।
जननी जन्म भूमि पै अब तो, जीवन मैं नेवछारियां॥
न रहिहैं दुष्ट यहै पन कीने, सुनो सभी सुकुमारियां।
जग जश सुधर फैलि फल लावै, हती हिन्द असनारियां॥

हा ! विधाता जब वाम होता है तो वान का शर्प बन जाता है। अरे असमय ! तूही सब कुछ कराता है, क्या कारण था कि मंगोल यहीं आवे ? और पिता जी उसे शरण दें ? उस दुष्ट अलाउद्दीन का यह साहस हो जावे कि वह एक बीर राजपूत कन्या के प्रति ऐसे दुर्भाव प्रगट करे ? हा पिता ! तुमने क्यों न मुझे आदेश दिया कि मैं स्वयं उस दुष्ट का सिर अपनेही हाथों काट लाती [संभल कर] अस्तु ! कुछ चिन्ता नहीं [अग्नि से] माता ! अब मुझे तुम्हारेही गोद में शान्ति मिलेगी, [सामने आकर] आशा

है मेरी इस क्रिया का समाचार पाकर अलाउद्दीन दिल्ली लौट जावे, कदाचित् तब मेरी यह मातृभूमि इन म्लेच्छों से रहित हो जावे, हे ईश ! मेरे इस अपराध को क्षमा करना, मैं केवल अपनी इस देवधरा जन्मभूमिही के लिये यह भयंकर कृत्य कर रही हूं। मैं समझती हूं इस्से हमारी माताएँ और बहनें भी कुछ लाभ उठावेंगी !

[शिखरणी]

सुनाऊं मैं तोकूं विनय सुनलो आज बहनो ।
तजो या संसारी मद, वरु परै दुःख सहनो ॥
करो सोई आली, जितिक मुनि देवों ने कहा ।
मिलै जगती में यों विमल जश जासों सुखमहा ॥

[अग्नि से]

माता ! तुझे मेरा साष्टांग प्रणाम है ।

[साष्टांग, भूमि में पड़ना इतने में एक सखी दौड़ी हुई आती हैं]

सखी—कुमारी जी देखिये ! वह देखिये ! यवन पताका इधरही चला आ रहा है । जान पड़ता है राजपूत सैन्य खेत रहा—

कुमारी—अच्छा कोई चिंता नहीं, घबड़ाना नहीं चाहिये ।

लेहु मातु अब अंकहि जनि करु बेर ।
जरौं प्रथम पुनि जरिहौं दुष्टन ढेर ॥

राजकुमारी—हे देवियों ! माताओं ! बहिनों ! यदि अपने सत्व की रक्षा करना है अपने पूर्वजों की मर्यादा रखनी है तो जैसे

वीर क्षत्रानियां रखती चली आ रही हैं। वैसे ही रख कर भारत देश का नाम रखलो शुभ मृत्यु से मत डरो, देश के लिये हवन हो जाओ ऐसे-(अग्नि में कूद पडती हैं)

सब—हां ! हां ! हम सब पतिलोक को अवश्य चलेंगें।

[सब बारी बारी अग्नि में कूद पड़ती हैं]

[पटाक्षेप]

नवम गर्भांक ।

[रण क्षेत्र के बाहर का मैदान महाराज अपने सैनिकों से उत्साह पूर्वक]

महाराज—मेरे प्यारे योद्धावों, तुम्हें किस मुख से धन्यवाद दूं क्यों न हो, राजपूत जाति तू धन्य है । तेरी महिमा इस संसार में अमर रह जायगी, वीरों ! देखो, भगेड़ों का पीछा करना क्षात्रि धर्म्म विरुद्ध है । सुनो !

"कभी न पीछा करो भागतों का यह मेरी मानो बैन ॥
सदा रहो विजितो पर प्यारे सरस दयालु तब है चैन ॥"

(किले की ओर से एक सैनिक घबड़ाया हुआ, महाराज के सन्मुख, दौड़ा आता है)

महाराज—(एक दम अचंभित होकर) क्यों रत्नसिंह ! सब कुशल तो है ? तुम इतने उत्साह के समय घबड़ाए क्यों जान पड़ते हो ?

रत्नसिंह—महाराज ! रंग में भंग होगया । यवन पताका देख कर धोखा हुआ जो यवनों से छीन कर हम लोग आगे २ लिये चले आते थे उसे देख कर रनिवास की युवतियों ने समझा कि

यवन सैन्य राजपूतों को हरा कर चढ़ी चली आ रही है ऐसा सोंच, रनिवास में बड़ा भयंकर दृष्य..................

महाराज—[बात काट कर घबड़ाहट से] क्या हुआ ?

रत्नसिंह—कुमारी देवल ने अग्नि प्रवेश कर लिया, और उनकी यह दशा देख, महारानी जी तथा दुधुआने भी व्याकुल होकर आत्म विसर्जन कर दिया।

महाराज—[नीचे शिर कर लेते हैं] हा ! दैव !! मैंने तेरा क्या बिगाड़ा था, हे जननी ! हे देवी ! तुम्हारे रहते हुए भी दास की यह दशा ! तुम्हारी सेवा का मुझे यही फल मिला है क्या तुम्हें ज्ञान नहीं था कि विजय हम्मीर ही को हुआ है। क्या तू रनिवास में इतना भी धैर्य नहीं दे सकती थी। (सोंचकर) नहीं ! नहीं ! जाना ? जाना ? कि तू इस वंश को निरमूल करने ही में प्रस्तुत है यह तुझे खबर नहीं यह बीर अरिसिंह का पुत्र, पित्रों की मर्यादा नहीं तोड़ सकता। कभी भी इन यवनों की आधीनता स्वीकार नहीं करेगा। बल्कि वीर गति को प्राप्त होगा। माता ! यदि रुष्ट हो तो यह लो (खंजर खींच अपने को मारना चाहता है इतने में रत्नसिंह हाथ थाम लेता है)

रत्नसिंह—महाराज ! यह आप क्या करते हैं। आप अपने पुत्र की ओर देखिये ! यदि ऐसा होगा तो सारा थम्भोर यवन के वश में हो जायगा और आपके वंश वाले सदा के लिये यवन दास कहलायेंगे—यदि यही करना है तो लीजिये यह तलवार [तलवार फेंककर] और हम सब क्षत्रियों

को अपने हाथों मुक्त कीजिये देश का कलंकित टीका सिर पर रह जायगा। आप हिंदु जाती के सिरमौर हैं।

महाराज—रत्नसिंह! अच्छा तो अब क्या चाहते हो!

रत्नसिंह—महाराज! अब अपने जीतेजी अपने हाथों से राजकुमार को गद्दी देकर हिंदु धर्म-रक्षक बनाइये। [तलवार उठाकर] हम इस मा दुर्गा की सपथ खा कर कहते हैं कि अपने जीते जी प्राण पण से कुमार तथा देश भूमी के निमित अपना रक्त बहाने को सर्वदा प्रस्तुत हैं और क्षत्रियों का यहि धर्म भी है।

महाराज—अस्तु! जो कुछ हुआ अच्छाही हुआ [संभल कर] कुछ चिन्ता नहीं "होनहार बलवान होता है"। [मन्त्री को बुला कर] मन्त्रीवर! [मंत्री केशरिया वस्त्र धारण किये दंडवतकर सामने खड़ा होजाता है]

मन्त्री—राजन्! दास को क्या आज्ञा है?

महाराज—देखो! मंत्रीवर अब हमारे दिन 'बाणप्रस्थ' के आचुके, तुम सोंच लो! हम कुमार को राजतिलक कर अपना शेष जीवन, देशाटन तथा देवाराधना में बिताना चाहते हैं।

मन्त्री—किन्तु! महाराज, कुमार अभी निरे शिशु हैं? वे इतने विस्तृत राज्य का सुप्रबन्ध कैसे कर सकेंगे?

महाराज—नहीं मन्त्री! तुम्हारी भूल है।

[बरवा]

को जग में अस जायो, बांध्यो पौन।
सिंह सुवन कह सिख यो, मारन कौन॥

क्षत्रियों के बालक यदि इतनी अवस्था में न सुधरे तो कब सुधरेंगे ? अस्तु ! अब तुम चल कर उनके राज्यतिलक का प्रबन्ध करो, और [रणक्षेत्र की ओर इंगित करके] इन मेरे जो रण में काम आये हैं उन अमर वीरों की अन्तेष्ठी क्रिया उत्तम रीति से करा दो।

मन्त्री—एवमस्तु ! महाराज !!

[महाराज द्वार के भीतर प्रवेश करते हैं और सब सैनिक उनके पीछे पीछे चले जाते हैं]

(पटाक्षेप)
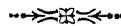
दशम गर्भांक।

[दो साधुओं का गाते हुये प्रवेश]

(गान–विहाग)

जगत में किरति रहत अडोल।
ना याकूं कोऊ चोरि सकत है, लै न सकै कोऊ मोल ॥
बखरा बांट होय नहिं यामें, है यह परम अतोल।
प्रबल हुताशन में न जरै यह, ना यामें है पोल ॥
यासे सब प्रिय होत मनुज नित, सो याकी जय बोल।
ये असार संसार स्वप्न में, तामें यश कर होल ॥
बस अस मंत्र "रुद्र" को जपियो, कीर्ति कन्द रस घोल।
जगत में कीरत रहत अडोल ॥

(स्वगत) अहा ! यह संसार कैसा विलक्षण है देखो ! जो बस्तु की साधारण जाज्वल्य मूर्ती, वह तो मिट जावे । परन्तु ! जो निराकार हो वह जन्म जन्मान्तर तक अमर होकर रहै ? इसीका नाम माया है यद्यपि वीर हम्मीर सर्वदा अटल न रहेगा । किन्तु ! आज गाथा रह जायगी । देखो कहा भी है–

(सवैया गान में)

वारन वाजि विभव परि पूरित,
जे तिन की तनहू रह जायगी ।
पास न रैहैं कछु अमरेश यहै,
सब की गति अन्त लखायगी ॥
जानत हौ मग सूधो सुजान अजान,
बने नहिं काज सिरायगी ।
यातै करैं चलो देश भलो जग में,
इक कीरति ही रह जायंगी ॥ १ ॥
जकि जैहै जुबान थकै पग की गति,
कै मतिहू मति अन्त दुरायंगी ।
कर काम कटै नहिं नेकु अमन्द,
दुचन्द कदम्बन दुःख बटायंगी ॥
अमरेश भरोसो नहीं तन को,
तनको नहिं जानैं कबै छुट जायंगी ।

करो देश भलो न तो पानि मलो,
जग में इक कीरति ही रह जायंगी ॥

(घनाक्षरी)

कीन्हें नाहिं दान औं नहान कबौं गंगा माहिं,
ताकी जीव आतमा न रंच सुख पायंगी ।
जौन तन पैहैं तौन तौन हीमें हाथ मलि,
पाछिले करम पै सदाही पछितायगी ॥
केवल कवीन औ अजेय नर इन्दन की,
कीरति सुभग महि मांहि विथुरायगी ।
अच्छे शूरवीर औ महान रन धीरन की,
देख लीजो अन्त में कहानी रह जायगी ॥

(बड़ा विलम्ब हुआ) अच्छा तो अब चलते हैं क्योंकि अभी महाराज के यहां तिलकोत्सव में भी जाना है। नमो नारायण !

(दोनो साधुओं का प्रस्थान और पांच युवतियों का प्रवेश)

१ सखी—आज तो बड़े आनन्द का दिन है ।

२ सखी—हां सखी ! क्योंकि आज राजकुमार को तिलकोत्सव होने वाला है ।

३ सखी—आज कुल प्रजा कुछ भेंट करेंगे और आनन्द गान करेंगे तो हम लोगों को भी एक २ कंचन कलश और पूजा सामग्री लेकर मंगल गीत गाते हुये चलनो चाहिये ।

[गान सोहर]

धनि धनि आजु घड़ी को है, आजु घड़ी को है रे ।
एहां ! बने हैं कुंवर महाराज, प्रजा सुख पावैं,
तो आनंद मनावहिंरे ॥ धनि० ॥
नित नित बढ़ै सुखकंदा, किरति जैसे चन्दा,
तो नीति चलावैं रिपुन दुख पावहिं रे ॥ धनि० ॥

[गाते हुए प्रस्थान]

यवनिका उद्घाटन ।
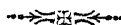
एकादश गर्भांक ।

(राज सभा बड़े समारोह से लगी है स्वजन विजन रीत्यानुसार आसनासीन है वीच में एक जड़ाऊ सिंहासन पर राजकुमार वहुमूल्यक वेषभूषा सुसज्जित विराजमान हैं दक्षिण पार्श्व में महाराज हम्मीरदेव स्वेत वस्त्रधारी वैंठे हुये हैं पीछे चार सेवक पंखा चौंर और छत्र लिये खड़े हैं सामने चांदी कीं चौकीं पर कन्चन थाल में तिलक सामग्री रखीं है

महाराज—(वाम पार्श्व में बैठे हुये एक वृद्ध पंडित जी से) आचार्य जी ! हम समझते हैं अब तो समय आ गया होगा ।

आचार्य्य—(नाक पर हाथ रख और स्वांस देख कर) बहुत ठीक है महाराज ! अब विलंब न होना चाहिये ।

महाराज—तो अब आपही उठिये और रोचना लगाइये !

आचार्य—अति उत्तम !

(कह कर उठते हैं और ब्राह्मण उठ कर उनके पीछे २ कुमार के सन्मुख आकर खड़े हो जाते हैं आचार्य थाल में से दधि अक्षत निकाल कर महाराज की ओर देख कर)

महाराज कहिये आज्ञा है न !

महाराज—हां महाराज ! अब आशीर्वाद दीजिये ।

(सब ब्राह्मण, शुक्लाम्बरधरं देवं, मंगलं भगवान विष्णु गणनान्त्वा, पुरुषसूक्त, इत्यादि पढ़ कर तिलक देते हैं और एक ओर जाकर अपने आसन पर बैठ जाते हैं, नेपथ्य में बंदूकों का शब्द होता है एक ओर से कविराज आकर सामने अंजली बांध कर खड़े हो जाते हैं)

कविराज—घनाक्षरी ।

परम प्रमोद प्रेम पूरन प्रवाह वारि,
विमल विवेकवान छिति बरसाय हौ ।
उत्तम विज्ञान औ कलान कृषि कौशल को,
नृपति सुजान प्रजा जनहिं जनाय हौ ॥
कुमति निवारि डारि फारि फूट दारुनहूं,
दुःखन नसाय द्वेष दारिद्र दुराय हौ ।
घूमै महि चक्र वक्र वैरी मिलि जैहैं धूरि,
न्याय नीति थापि धर्म्म राजहू कराय हौ ॥

दोहा ।

सदा राज वर्धन करहु, जुग जुग जियहु नरेश ।
सुयश सदा तुव जगत में पसरै रहनि दिनेश ॥

(मन्त्री उठते हैं एक मनुष्य एक कंचन थाल में एक बहु मूलक शाल और पांच थैली रख कर उनके हाथ में देता है और वे उसे लेकर कविराज जी को देते हैं और कविराज उसे ले कर [आयुष्यमान भौ] कह कर एक स्थान पर जाकर बैठ जाते हैं महाराज हम्मीर देव अपने स्थान से उठकर पुत्र के सम्मुख जाकर खड़े हो जाते हैं, कुमार उठ कर प्रणाम करते हैं, महाराज हृदय से लगा लेते हैं, कुमार पुनः बैठ जाते है महाराज तिलक लगाते है)

महाराज—प्यारे पुत्र ! आज जो मैं यह महान मंत्र तुम्हें बतलाता हूं कभी भी न भूलना और इसे सर्वदा स्मरण रखना ।

देखो ! (नीति शिक्षा)

प्यारे पुत्र आज तुम से मैं जो कुछ कहूं सुनो धरि ध्यान ।
रखना इसको सुमिरन सब विधि भूल न जाना मंत्र महान ॥
जो कुछ मैंने निज जीवन में अनुभव किया कमाया है ।
वो सब तुम को दे देता हूं यही मेरा सरमाया है ॥१॥
देखो अपने तुम जीवन में किसी की मत करना दासत्व ।
मर मिटना पर कभी न प्यारे छोड़ बैठना अपना सत्व ॥
कबहुँ म्लेक्ष अरु दुष्ट न अपने राज बीच बसने देना ।
अपनी मातृ भूमि की रक्षा करके कीर्ति अचल लेना ॥२॥
नीति न्याय अवलम्बन करना धर्म्म हेतु तन विधवाना ।
प्रजा प्राण सम रखना हरदम शत्रुन का शिर छिदवाना ॥

सदा सत्य से सहमत रहना मिथ्या में मन मत खोना ।
पारस्परिक वैर से भगना दिन में कभी न तुम सोना ॥३॥

कितना भी बलवीर शत्रु हो भय उस्से तुम मत खाना ।
रहना यों निर्भीक सदा ही श्रम से कभी न अलसाना ॥

अपनी 'पन' का पालन करना चाहे कुछ हूं हो जावे ।
वरु घर द्वार राज दारा सुत सब मिट्टी में मिल जावे ॥४॥

नकल किसी की तुम मत करना, अपनी रीति सदा करना ।
तजि स्वदेश की वस्तु विदेशी पै चित कबहुं न तुम धरना ॥

अशरण को आश्रय देना ही क्षात्रि धर्म्म के है अनुकूल ।
सो तुम सदा याद यह रखना, कभी न जाना इस्को भूल ॥५॥

मातृ भूमि भाषा जननी की, सदा वृद्धि करते रहना ।
स्वाभिमान को कभी न खोना कोटि दुःख वरु तुम सहना ॥

पूर्व पुरुष के आदर्शण से कार्य्य क्षम बनते रहना ।
कभी किसी के बहकाने से प्यारे लाल न तुम बहना ॥६॥

निज स्वतंत्रता की रक्षा कर सब विधि तुम रहना स्वाधीन ।
विष खाकर वरु तुम मर जाना, पर नहिं होना पर आधीन ॥

कभी दुखारी प्रजा न करना है यह मेरी इतनी सीख ।
पुत्र जान कर प्यारे तुम से बस इतनी ही मांगों भीख ॥७॥

कुमार—(हाथ जोड़ कर)

दोहा—एवमस्तु महाराज वर, हे पितु हे सुरराज ।
बचन रावरी सीस धरि, करिहौं अब सब काज ॥

[कुमार प्रणाम कर अपने स्थान पर बैठ जाते हैं महाराज हम्मीर देव अपने स्थान पर जाकर बैठ जाते हैं और सब अभिनायक मिल कर कोरस का गान करते हैं]

(गान कोरस)

पावनी सनातनी तू सिंहवाहिनी ।
प्रणतपालिनी सदा दयानिकेतनी ॥
शंकरार्धगात्रिणी तू महिषघातिनी ।
परब्रह्मरूपिणी त्रिलोकपालिनी ॥
माता, वंदौं, चरनको, सुजनको, महिस्वराज्यदायिनी ॥२॥

(वि. मु. का.)

इति वीर हम्मीर नाटक समाप्त ।

जार्ज प्रिंटिंग वर्क्स, कालभैरव, काशी ।

शुद्धा शुद्धा पत्र ।

शुद्ध	अशुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
घ्राण	ग्रहण	२	४
सम्पति	संमति (भूमिका)	१	७
हरिचंद	हरिश्चन्द्र	,,	१०
असनेह	स्नेह	७	१५
भीषम	भीष्म	८	१
लखो	लाखों	,,	२
चकधारी	चक्रधारी	,,	४
पैर	पै-	९	५
पै	पैर	९	५
उट्ठो	उठो	९	७
सुराज	सुरा	,,	११
चिढ़कर	चिढ़ाकर	१२	९
अवस	अव	१२	१४
है	हो	१२	२४
राज़	रास्ता	१६	३
तुम्हारे	तेरे	,,	१४
जाते हो	जाता है	,,	१६
दो	दे	,,	१६
करो	कर	,,	१८
तुम	तू	१७	२
ते	ता	१७	२
लो	ले	१७	४
परजन	परज	१८	६
मेह नभ घिरी	मेह घिरि	१८	१९
भीषम	भीष्म	,,	२०
रासि	रासी	१९	२१
नासि	नासी	,,	२२

शुद्ध	अशुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
मातृभाषा	मातृ	२१	३
छिद्र	छिद्रम	२२	५
जरूर	हुजूर	,,	१६
पावहिं	पावहीं	२३	७
अरु	सअ	,,	,,
वरु	बहु	,,	१७
सुरतरु	सुखारु	,,	२०
अवनि	अवनी	२४	२
बनिज	निज	२५	१७
मंगोल	मंगोला	२८	६
खुशखबर	खुशखवरी	३०	१६
बताएं	बतलाएं	३०	१७
गढाएं	गढवाएं	३१	२
दिले	दिल	३	११
भूमी	भूमि	३५	३
कदलि	कदली	,,	१६
जो कुछ भी कहूं	कहू जो कुछ	३६	२०
अलीखान	अली खां	,,	२१
जाके शाहा	जाकर शाह	,,	१६
इसी	रसी	३८	६
बुढौती	बुढवौती	४३	१
पास अब	पास	४४	३
घमण्ड	घर	४५	१६
मजम्मत	मजामत	४७	१४
मजम्मत	मजामत	४८	१
आर्द्र	आद्र	५१	१७
मर्द	मद	५८	१०
आप क्यों	क्यों	६२	८
शाह को है	शाह को	६४	२

सूचना।

इस ग्रन्थमाला के स्थाई ग्राहक होने के लिये १) रु० अग्रिम मूल्य भेजकर अपना नाम स्थाई रजिष्टर में लिखा लिजीये।

स्थाई ग्राहकों को पुस्तक पौन मूल्य पर दी जायगी।

उपयोगी पुस्तक।

वीर हम्मीर	॥=)
बालबिवाह	तैय्यार है।
कृषक	,,
दमयन्ती	,,
जन्मभूमि	लिखा जा रहा है।
वीर शिवा	,, ,, ,,

अन्य विक्रियार्थ पुस्तकें।

जेनरल जार्ज वाशिंगटन	मूल्य	१)
पद्य पुष्पांजली		।=)
सुक्रात का जीवन वृतान्त		।)
विनोद कविता		=)
इंगलिश ग्रामर		।।।)
अज विलाप		।)
स्वास्थ रक्षा		।=)

मैनेजर, भुवनेश, ग्रन्थमाला,

धेनुगांवां, बस्ती।

मिलने का पता:—

१—शारदा पुस्तकालय,

कालभैरो, काशी।

२—मुन्शी शिवरतन लाल,

रायगंज, अयोध्या।